मार्च २००१ Rs.10/-

चन्दामामा

चन्दामामा

सम्पुट - १०४ मार्च २००१ सञ्चिका - ३

अन्तरङ्गम्

इस माह का विशेष

दैव सान्निध्य (वेताल कथा)

यक्ष पर्वत

बहू जो पसन्द आयी

भारत की गाथा

Printed and Published by B. Viswanatha Reddi at B.N.K Press Pvt. Ltd., Chennai–600 026 on behalf of Chandamama India Limited, No.82, Defence Officers Colony, Ekattuthangal, Chennai - 600 097. Editor: Viswam

सबसे उत्तम

उपहार

आप अपने
दूर रहनेवाले करीबियों के लिए
सोच सकते हैं

चन्दामामा

**उन्हें उनकी पसंद की भाषा में
एक पत्रिका दें**

असमिया, बंगला, अंग्रेजी, गुजराती, हिन्दी, कन्नड़,
मलयालम, मराठी, उड़िया, संस्कृत, तमिल व तेलुगु

और उन्हें घर से दूर घर के
स्नेह को महसूस होने दें

शुल्क
सभी देशों में एयर मेल द्वारा बारह अकं 900 रुपये
भारत में भूतल डाक द्वारा
बारह अंक 120 रुपये

अपनी रकम डिमांड ड्राफ्ट या मनी आर्डर द्वारा
'चंदामामा इंडिया लिमिटेड' के नाम भेजें
सेवा में :

PUBLICATION DIVISION
CHANDAMAMA INDIA LIMITED
No. 82, Defence Officers Colony,
Ekkatuthangal, Chennai - 600 097.

संपादक
विश्वम

चन्दामामा
पत्रिका विभाग
नं. ८२, डिफेन्स आफिसर्स
कॉलोनी,
इकाडुथंगल,
चेन्नई - ६०० ०९७.
फोन : २३४ ७३८४
२३४ ७३९९
फैक्स : २३४ ७३८४
e-mail :
chandamama@vsnl.com

For USA
Single copy $2
Annual subscription $20
Intending subscribers in the USA and Canada can mail their remittances to :
INDIA ABROAD
43 West 24th Street
New York,
NY 10010
Tel: (212) 929-1727
Fax (212) 627-9503

संस्थापक

चक्रपाणि, बी. नागि रेड्डी

समय कहाँ है... पढ़ने के लिए ?

क्या बच्चों में दृढ़तापूर्वक पढ़ने की आदत की ओर झुकाव पैदा करना चाहिए? इस विवादित क्षेत्र से अभी ऊपर दिया अंतिम शब्द सुनना बाकी है। तीन दशक पूर्व माता-पिता टी.वी. (टेलीविजन) को दोष दे रहे थे। उनका कहना था कि टी.वी. के सामने बैठे बच्चों को वहाँ से उठाना बड़ा कठिन कार्य है। पढ़ने का समय कहाँ हैं ? वे पूछते थे। याद रखिए कि यहाँ पाठ्य पुस्तकों के अतिरिक्त पढ़ने की बात हो रही है। टी.वी. के अविष्कार के दस-पंद्रह सालों तक लगभग सभी घरों में टी.वी. एक अनोखी वस्तु बन गई थी, उस समय माता-पिता यह भूल गए थे। सबसे बड़ी बात तो यह थी कि जब वे स्वयं ही समय बिताने के लिए टी.वी. देखते थे तो वे अपने बच्चों को कैसे मना करते? जबकि मनोरंजन के लिए उन्होंने टेलीविजन के अतिरिक्त कोई विकल्प ही नहीं ढूँढ़ा।

सोवियत संघ में सत्तर के दशक में एक सर्वे किया गया और परिणाम बच्चों के पक्ष में गया ! सर्वे में पाया गया कि टी.वी. उन बच्चों में जिज्ञासा बढ़ाने में काफी समर्थ थी जो किताबों की सहायता से अपने ज्ञान बढ़ाकर अपनी जिज्ञासा को तृप्त करते थे। अध्ययन माता-पिता, लेखक तथा प्रकाशकों के लिए एक दैवी प्रेरणा था।

आगे चलकर माता-पिता ने कम्प्यूटर, इन्टरनेट तथा अन्य एलेक्ट्रानिक उपकरणों को दोष देना आरम्भ कर दिया कि ये बच्चों को किताबों से दूर हटा रहे हैं। बेशक वे पढ़ते हैं, परन्तु वे वही पढ़ते हैं जो कम्प्यूटर-स्क्रीन पर आता है। प्रश्न पुनः दुहराया गया कि किताबें पढ़ने के लिए उनके पास समय कहाँ है? दो तरह की बातें हमेशा माता-पिता को परेशान करती थीं। पहली कि इन्टरनेट कुछ ऐसी बातों की जानकारी भी देता है, जो वे स्वयं नहीं चाहते कि उनके बच्चे पढ़ें और जानें। दूसरी कि इन्टरनेट के सामने बैठकर जितना वक्त बच्चे बिताते हैं, उससे उनकी आँखों पर भी कुप्रभाव पड़ता है और उनके स्वास्थ्य पर भी।

हाल ही में भारत के दो महानगरों में पन्द्रह दिनों तक चलनेवाला पुस्तक मेला लगा था, जहाँ बच्चों को किताबों के लिए उत्सुक देख गया।

यह अभिभावकों का संदेह दूर करने के लिए काफी था कि उनके बच्चे किताबों के दिवाने हैं अथवा वे किताब पढ़ने की आदत को भूल गए हैं।

पुस्तकों का संसार सदा जीवित रहेगा ...इसमें कोई संदेह नहीं है।
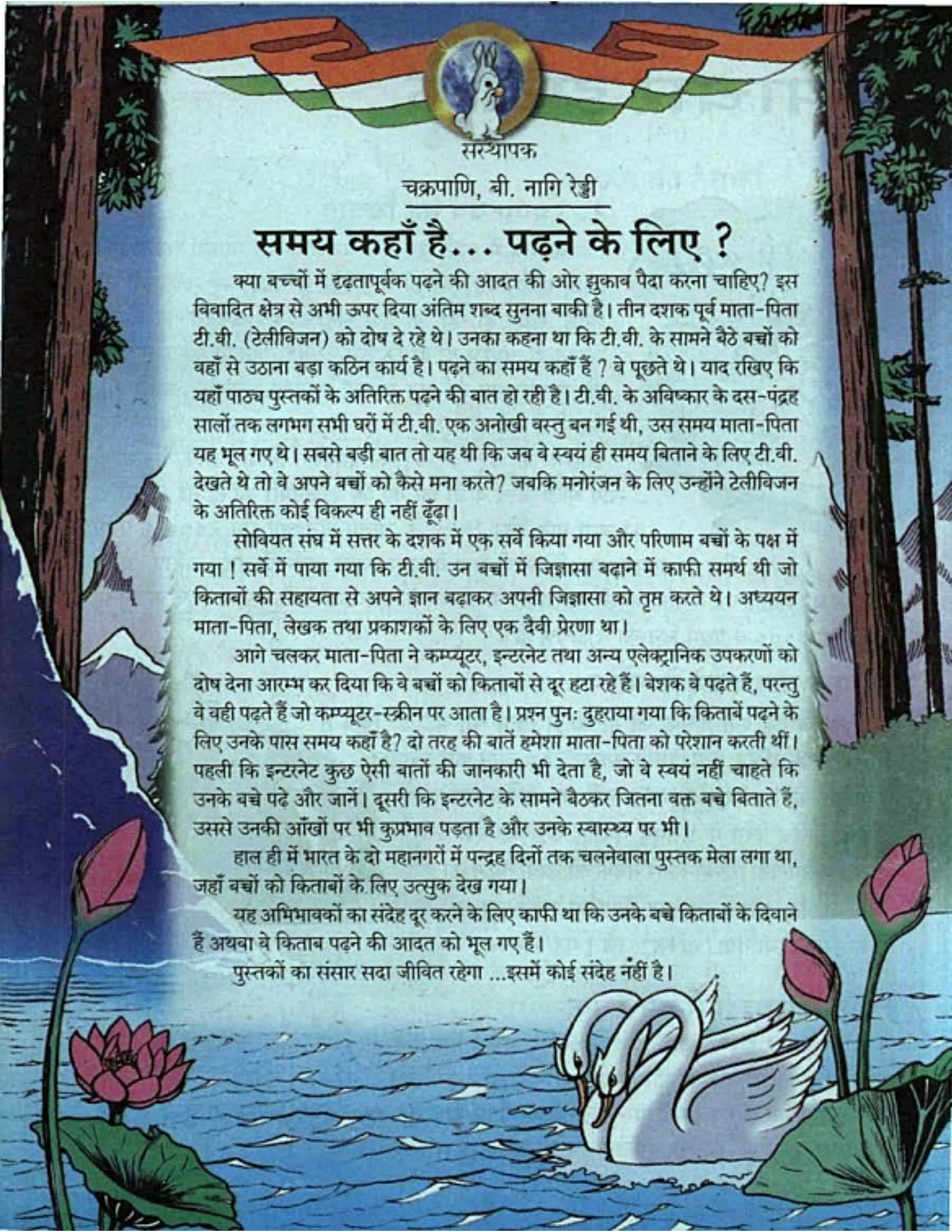
समाचार झलक

१. १००० वर्ष का विवाद

वास्तव में हजार वर्ष तक यह विवादित मामला समाप्त नहीं हुआ, बल्कि यह एक वर्ष में समाप्त हो गया। नई सहस्राब्दी का संदेह, संदेह ही रहा कि क्या सन् २००० जनवरी को तीसरी सहस्राब्दी आरम्भ हुई या कि सन् २००१, जनवरी को इस विवाद की समाप्ति तब हुई जब प्रसिद्ध वैज्ञानिक, लेखक, आर्थर सी. क्लार्क ने बड़े ही स्पष्ट रूप से तीसरी सहस्राब्दी के 'वास्तविक आरम्भ' को ०१-०१.०१ को प्रमाणित किया। उनके अनुसार वे लोग थोड़ा जल्द बाजी कर गए जो १ जनवरी को ही नई सहस्राब्दी का जन्म मान बैठे। १९९९ के अंतिम दिन और सन् २००० के प्रथम दिन के उत्सव तक श्री क्लार्क क्षमा के बास काफी प्रार्थनाएँ आईं। चलिए, आशा करें कि यह संदेहास्पद स्थिति अगली सहस्राब्दी के आरम्भ के समय यानी कि सन् २९९९ के अंतिम दिन तथा ३००० वे प्रथम दिन को न उत्पन्न हो।

आपके याद रखने के योग्य

१३ वर्षीय एक बालक जो मोरक्को में रहता था, वह छः दिनों में १,१०० बार छींका, एक दिन में लगभग २०० बार। कोई उच्चमान स्थापित करने का उसका लक्ष्य नहीं था, बल्कि चिकित्सक उसका इलाज करने में असमर्थ थे और उन्हें यह एक अद्‌भुत घटना मालूम पड़ी। उन्होंने उस लड़के की छींक रोकने की काफी कोशिश की, अंततः उसे तब रोका जा सका जब उसे दवाई देकर सुला दिया गया। अक्क... छी ! यह कौन था?

एक सहस्राब्दी से दूसरी तक

ग्यारह 'स्काई डाईवर्स' सन् २००० के अंतिम मिनटों में ३९० मीटर की ऊँचाई से एक साथ छलांग लगाए। मलेशिया की राजधानी में स्थित पीटर्सन ट्विन टावर्स विश्व में सबसे ऊँचा है, जहाँ से उन्होंने यह छलांग लगाई, परन्तु जब वे धरती पर उतरे तब तक २००१ आरम्भ हो चुका था। ये डाईवर्स यू.एस.ए., जर्मनी, स्वीडेन तथा सउदी अरब से आए थे।

एक पाँव की तैराकी

यह घटना केरल में घटी। २१ वर्षीय श्याम प्रबोधिनी ने अपने हाथों को आगे की ओर जोड़कर, और पाँवों को पीछे की ओर बाँध दिया। इसके बाद वे पानी में कूद पड़े और १९ मिनटों में ३ कि.मी. तैराकी पूरी की। जब वे पानी से बाहर आए तो जो रस्सियाँ उनके हाथ पाँव में बाँधी गई थी, वे वैसे ही बँधी पड़ी थीं। हजारों की संख्या में लोग वहाँ जोखिम में पड़े पाँवों को देख रहे थे, उनकी साँसे रुकी हुई थी, परन्तु जब श्याम को किनारे पर लाया गया तो वे प्रसन्नता से खिल उठे।

एक नकारात्मक छवि

यह अंकगणित का बड़ा ही सरल तरीका है जिससे आर्थर क्लार्क को सहस्राब्दी का रहस्य सुलझाने में मदद मिली। हो सकता है तुम सभी लोग गणित, अपने अध्यापक के बदले उनसे सीखना चाहोगे। इंग्लैण्ड के एक विश्व विद्यालय से जुड़े कुछ शोधकों ने एक अद्‌भुत अध्ययन विधि सोची। उन्होंने सोचा कि बच्चे अक्सर अपने गणित के अध्यापक को पसंद नहीं करते। इसलिए उन्होंने १२ और १३ वर्ष के उम्र के बच्चों से यह पूछा कि तुम अपने गणित शिक्षकों का चित्र बनाओ कि वे कक्षा में किस प्रकार प्रवेश करते हैं और उनका हाव-भाव कैसा रहता है? कुछ को छोड़कर चित्र अधिक अच्छे नहीं थे। कुछ चित्र गंजे सिर, दाढ़ी, चश्मा, माथे पर झुर्रियाँ, चेहरा खिंचा हुआ, और डरावनी दो सींघे ! कुछ बच्चों ने अपने शिक्षकों के बारे में इस प्रकार टिप्पडी की ''गणित वाले दूसरे गणित वाले के अतिरिक्त किसी से भी दोस्ती नहीं करते'', ''वे बड़े गुस्से वाले होते हैं'', ''उनका कोई सामाजिक जीवन नहीं होता'', वे बच्चों को बंदूक की नोक पर सवाल करने को कहते है'' आदि आदि। अब वे शोधक यह प्रयास कर रहे हैं कि अध्यापक सकारात्मक छवि बनाएं। ये ३०० बच्चे जिनसे पूछा गया वे ब्रिटेन, स्वीडेन, नार्वे, फिनलैण्ड, जर्मनी, रोमानिया तथा यू.एस.ए. से लाए गए थे।
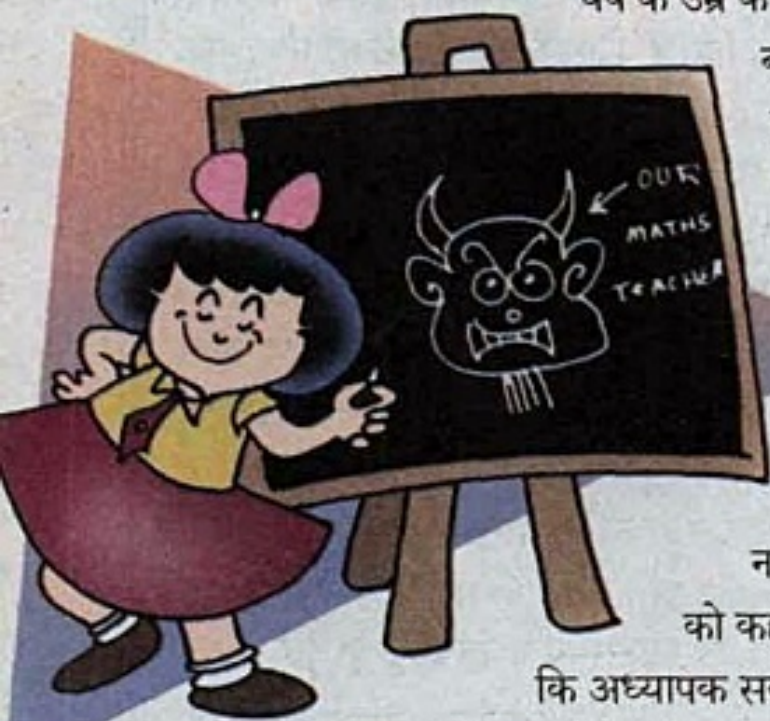
कच्छ में भूकम्प

२६ जनवरी को जब भारत गणतंत्र दिवस मना रहा था और सारे देश में लोग इस समारोह का आनन्द उठा रहे थे। प्रत्येक प्रांत, शहर, जिले और कस्बे इस महत्वपूर्ण दिन के लिए तैयार हो रहे थे। हजारों लाखों लोगों ने अपने देश भक्ति विचार प्रस्तुत किए, व्यक्तिगत रूप से समारोहों में भाग लिया या अपने टेलीविजन पर देखकर भी इसका आनन्द उठाया। सारे राज्य, मात्र गुजरात को छोड़कर, जहाँ के ५००० वर्षों के इतिहास में ऐसी भयावह दुर्घटना नहीं घटी, वहाँ अचानक सब कुछ रुक गया।

समारोह आरम्भ होने के एक घंटे पूर्व ही वहाँ एक भूकम्प आया और अनेक शहरों को ध्वस्त करते हुए मानव-जीवन को समाप्त करता हुआ निकल गया। लोगों के मरने की संख्या में प्रति घंटे बढ़ोत्तरी हो रही है। करोड़ों लोग बेघर हो गए हैं, जिनके घर टूट-फूटकर ढह गए हैं। हजारों लोगों को जिन्हें बचा लिया गया, वे गम्भीर तथा मामूली रूप से घायल भी हैं। हजारों लोग लापता हैं। उन हजारों बच्चों के बारे में पूछिए मत जो अनाथ हो गए हैं।

इस प्राकृतिक दुर्घटना के तीन दिन की सूचना के बाद पता चला है कि इस भूकम्प का अधिक असर भुज, और कच्छ जिले के अन्य शहरों में जैसे, अन्जार, रायर और भाचाऊ तथा अहमदाबाद पर पड़ा है। कच्छ का रान जिला भूकम्प से सबसे अधिक प्रभावित बताया जा रहा है, जो अधिक कीचड़युक्त होता है। इसलिए यहाँ पर कम्पन का प्रभाव भी अधिक पड़ा।

प्राप्त समाचार के अनुसार महत्वपूर्ण द्वारका मंदिर को भी हानि पहुँची है। इसके अतिरिक्त भुज में स्थापित ऐतिहासिक संग्रहालय पूरी तरह नष्ट हो गया है, जिसके कारण अनेक ऐतिहासिक वस्तुएँ बिना कोई चिन्ह छोड़े ही के समाप्त हो गयी हैं। गुजरात में बचाव और पुनर्निवास का कार्य बड़े जोर शोर से चल रहा है। सहायता के लिए मानवशक्ति, दवाईयाँ और अन्य आवश्यक वस्तुएँ तथा आर्थिक सहयोग काफी मिल रहा है।

तूफान, भूसखलन, बाढ़ तथा भूकम्प आदि मानव-जीवन पर अपना कुप्रभाव ही छोड़ते हैं। विज्ञान और तकनीक की प्रगति के बाद ऊपर लिखी कुछ प्राकृतिक आपदाओं का पुर्वानुमान लगाया जा सकता है। परन्तु भूकम्प के बारे में कोई जानकारी नहीं दी जा सकती। इसीलिए धन-जन की हानि अधिक होती है।

चलिए एकजुट होकर हम भी दुर्भाग्य से जूझ रहे इस राज्य की सहायता करें और अपना सहयोग प्रधानमंत्री राष्ट्रीय सहायता कोष (C/o. Prime Minister's Office, New Delhi - 110 011), को दें तथा इस समस्या की घड़ी से साहसपूर्वक निपटने के लिए उन्हें उत्साहित करें।

- प्रकाशक

वेताल कहानी

दैव सान्निध्य

धुन का पक्क। विक्रमार्क पुनः पेड़ के पास गया। पेड़ से शव को उतारा और अपने कंधे पर डाल लिया। फिर यथावत वह श्मशान की ओर बढ़ने लगा। तब शव के अंदर के बेताल ने कहा "राजन्, मेरी समझ में अब तक यह नहीं आया कि किस महान कार्य को साधने के लिए आधीरात के समय इस भयंकर श्मशान में घूम-फिर रहे हो। इतने कष्ट उठा रहे हो? परंतु इसके कोई आधार भी तो नहीं है कि केवल श्रम करने मात्र से और सहनशील होने मात्र से प्रत्याशित लक्ष्य की सिद्धि होगी। क्या इन्हें कोई ऐसा प्रमाण मिला है कि तुम्हारा लक्ष्य पूरा होगा? जिस लक्ष्य के लिए इतना परिश्रम कर रहे हो, वह सफल होगा? कम से कम तुम्हें इसकी भनक हुई है? अगर

अब तक ऐसा नहीं हुआ हो तो तुम्हारी सारी मेहनत बेकार हो जायेगी। तुम्हें सावधान करने के लिए रामाचारी नामक एक पुजारी की कहानी सुनाना चाहूँगा। ध्यान से सुनो और अपने को सुधारो।'' फिर बेताल रामाचारी की कहानी को सुनाने लगा।

चक्रपुरी का राजा चंद्रसेन बीमार पड़ गया। वैद्यों ने अपनी तरफ़ से कोई कसर न रखी, किन्तु उसकी तबीयत नहीं सुधरी। राजा ने एक दिन एक सपना देखा। उस सपने में एक दिव्य पुरूष प्रत्यक्ष हुआ और कहा ''तुम्हारे शासन-काल में लोगों के स्वार्थ की मात्रा सीमाओं को पार कर गयी है। लोग बेरोकटोक पाप करते जा रहे हैं। कुल, मत, जाति के नाम पर साथी नागरिक का अपमान किया जा रहा है, द्वेष की भावना बढ़ाती जा रही है। जनता की गलतियों का ज़िम्मेवार उनका राजा ही होता है। इसी कारण तुम इतनी भयंकर बीमारी के शिकार हुए हो, जिसकी चिकित्सा नहीं हो पा रही है।''

चंद्रसेन ने उस दिव्य पुरूष को प्रणाम करके पूछा ''मैं अपनी गलती स्वंय सुधार लूँगा, परंतु उसके पहले इस बीमारी से छुटकारा मिलना चाहिये न? इसके लिए कृपया आप कोई उपाय सुझाईए।''

दिव्य पुरुष ने कहा ''तीन, बस तीन तुलसी के पत्ते चबाओ। तुम्हारा रोग दूर हो जायेगा। किन्तु तुलसी के उन तीन पत्तों को जो व्यक्ति तुम्हारे मुंह में डालेगा, उसे चाहिये कि दस वर्षो तक एक क्षण के लिए भी दैव सान्निध्य छोड़े बिना उसने पवित्र हृदय से भगवान की पूजा की हो।'' कहकर वह दिव्य पुरुष अदृश्य हो गया।

सबेरा होते ही चंद्रसेन ने मंत्रियों को बुलाकर अपने सपने के बारे में बताया। सबको लगा कि सपने में सचाई है। अत: वह उस व्यक्ति की खोज में लग गये जो महाराज के रोग को दूर कर सके, उसे चंगा कर सके।

सीतापुर नामक गाँव में राम का एक सुप्रसिद्ध मंदिर था। उस मंदिर का पुजारी रामाचारी उन्नत कोटि का विष्णु भक्त था। सदाचार संपन्न था। बारह सालों के पहले उसे एक पंडित से वाद-विवाद करना पड़ा। वह पंडित दूर प्रांतों में जाकर और ज्वालामाली नामक भगवान की भक्ति में खो गया, जिस भगवान का उल्लेख पुराणों में कहीं भी नहीं है। उसका दावा था कि यह ज्वालामाली शिव और केशव से भी महान हैं, श्रेष्ठ हैं। रामाचारी से उसका यह दावा और प्रचार सहा नहीं गया। उस पंडित से वाद-विवाद करता रहा लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। आखिर उसने तंग आकर पंडित से कहा ''तुमसे

बातें करते रहने से कोई लाभ नहीं होगा। तुझ जैसे व्यक्ति को छूना भी पाप है।'' फिर वह वहाँ से जाने लगा।

''ज्वालामाली पर विश्वास रखनेवाले को कोई भी पाप छू भी नहीं सकता। इसलिए तुम्हें छूने से मैं बिल्कुल नहीं डरता। तुम्हें छूकर थोड़ा सा पाप तुम पर मढ़ दूँगा। जब तक ज्वालामाली का विश्वास नहीं करोगे, तब तक यह पाप तुम्हें नहीं छोड़ेगा, तुमसे चिपका ही रहेगा'' कहते हुए पंडित ने रामाचारी का हाथ पकड़कर उसे रोक लिया।

रामाचारी ने अपना हाथ तुरंत छुड़ाया और सीधे राममंदिर में जाकर राम से कहने लगा ''श्रीरामचंद्र प्रभो, एक पापी ने मुझे छू लिया। इस बात का प्रमाण जब तुम दिखाओ कि मैं इस पाप से मुक्त हो गया हूँ, तभी मैं यहाँ से जाऊँगा। नही तो यहाँ से हटने का प्रश्न ही नहीं उठता।''

उस क्षण से लेकर रामाचारी मंदिर में ही रहने लगा। उसकी पत्नी और संताने उसके सम्मुख गिड़गिड़ाए, परन्तु घर आने के लिए वह तैयार नहीं हुआ। यों बारह साल गुजर गये। जनता उसे महाभक्त मानने लगी। श्रीराम का ही नहीं बल्कि उसका भी दर्शन करने के लिए बहुत लोग आने लगे।

चंद्रसेन के मंत्रियों को रामाचारी के बारे में समाचार मिला। राजधानी आने के लिए उसे खबर भेजी गयी। किन्तु उसने उसे ले जाने आये दूतों से साफ-साफ कह दिया कि ''मैं प्रतिज्ञा बद्ध हूँ और किसी भी स्थिति में राम का मंदिर छोड़कर नहीं आ सकता।''

तब मंत्रियों में से एक रामाचारी से स्वयं

मिला और कहा कि महाराज के पास आने पर उसे लाख आशर्फियाँ दी जायेंगी। उसने धमकी भी दी कि अगर वह नहीं आयेगा तो उसे कठोर दंड दिया जायेगा। रामाचारी अपनी बात पर डटा रहा और मंत्री का प्रस्ताव ठुकरा दिया। उसका विश्वास था कि राम ही उसकी रक्षा करेंगे।

रामाचारी की भक्ति पर मुग्ध होकर मंत्री ने कहा, ''स्वामी, आप प्रमाण की प्रतीक्षा कर रहे हैं न? महाराज को आप स्वस्थ बना पायेंगे तो यही इस बात का प्रमाण होगा कि ज्वालामाली के भक्त के स्पर्श से लगे पाप से आप मुक्त हो गये। इसलिए आप महाराज को रोग से वियुक्त कर दीजिये। आपको भी प्रमाण मिल जायेगा और महाराज भी रोग से मुक्त हो जाएँगे। एक पंथ दो काज।''

रामाचारी ने भाव में अपना सिर हिलाते हुए कहा ''चंद्रसेन महाराज के पिता उग्रसेन महाराज

तुरंत की गयी। मोतियों की पालकी में उन्हें लिटाया गया। कहार बड़ी सावधानी से राजा को ढोकर ले गये ताकि उन्हें कोई कष्ट महसूस न हो। पालकी के सामने सैनिक थे और पीछे उसका परिवार। उनके पीछे भी सैनिक तैनात थे।

सीतापुर की सरहद पर पहुँचने के बाद जोर की हवा चली। तेजी से चलनेवाली उस हवा से बचने के लिए कहारों ने एक वृक्ष के नीचे पालकी उतारी। सैनिक और परिवार उस वृक्ष के चारों ओर खड़े हो गये।

उस समय वहाँ एक योगी आया। राजा के पास जब वे जा रहे थे, तब किसी भी ने उन्हें नहीं रोका। राजा के पास आकर योगी ने कहा "पुत्र, तुम्हारी यात्रा कहाँ तक?"

राजा बैठने की कोशिश करने लगा तो योगी ने उसे ऐसा करने से मना किया। लेटे ही लेटे राजा ने अपनी कथा सुनायी।

हर वर्ष इस मंदिर आते थे और भगवान राम का दर्शन करते थे। महाराज चंद्रसेन एक भी बार यहाँ नहीं आये। इसी कारण श्री रामचंद्र प्रभु उन्हें अपने यहाँ बुलवा रहें हैं। प्रमाण जब तक प्राप्त नहीं करता तब तक मंदिर को छोड़कर आने का सवाल नहीं उठता। महाराज को ही यहाँ बुला लाइये", वह अपने हठ पर डटा रहा।

ऐसी दशा में भला मंत्री क्या कर सकता था। राजधानी लौटकर जो हुआ, पूरा का पूरा विवरण महाराज को सुनाया। सब कुछ सुनने के बाद आनंद भक्ति होकर महाराज ने कहा "रामाचारी महान भक्त हैं। ऐसे महान भक्त के दर्शन मात्र से मेरे समस्त पाप धुल जायेंगे। मेरे सपने के साकार होने के दिन निकट आ रहे हैं। मुझे सीतापुर के राम मंदिर में पहुँचाने की व्यवस्था कीजिये।"

राजा को सीतापुर ले जाने की व्यवस्था

योगी ने पूरी कथा सुनने के बाद कहा।"मेरे पास तुलसी के ऐसे पत्ते हैं, जिनसे किसी भी प्रकार के रोग की चिकित्सा हो सकती है। तीन खाओगे तो तुम्हारा रोग दूर हो जायेगा।"

"योगिवर, मेरा रोग बड़ा ही विचित्र रोग है। दस सालों तक एक भी क्षण छोड़े बिना मंदिर में ही आपने अपना समय बिताया?" चंद्रसेन ने योगी से पूछा।

योगी ने हंसकर कहा "मैं तो नित्य संचारी हूँ"।

दूसरे ही क्षण राजा ने कहा कि मैं रामाचारी के हाथों से ही तुलसी के पत्ते खाऊँगा।

"पुत्र, तुम ज्ञानी हो। तुममें निहित ज्ञान में ही स्वप्न का रूप धारण किया। फिर भी थोड़ा बहुत अज्ञान तुममें शेष है। इसी कारण

तुम रामाचारी के पास जाने की जिद कर रहे हो। वहाँ तुम्हें कोई फल मिलनेवाला नहीं है। यहीं से तुम वापस जा सकते हो। मुझसे दिये जानेवाले तुलसी के पत्ते खाओ और चंगे होकर यही से लौट जाओ''योगी ने राजा को समझाते हुए कहा।

मंत्री यह पूरा वार्तालाप सुन रहा था। वह आगे आया और चंद्रसेन से कहा "महाराज, यह योगी अपने को नित्य संचारी कहते हैं। इसका यह अर्थ हुआ कि किसी भी मंदिर में दस क्षण भी नहीं ठहरते। तिसपर इनका यह कहना है कि रामाचारी के यहाँ जाने से कोई लाभ नहीं होगा। ऐसा प्रतीत होता है कि ये आपकी परीक्षा करने के लिए श्रीरामचंद्र के भेजे दूत हैं। नहीं तो ऐसा भी हो सकता है कि ये शत्रु के कोई गुप्तचर हों, जो आपको स्वस्थ देखना नहीं चाहते। इतनी दूर जब हम लोग आ गये, तब भला क्यों इसका विश्वास करें और रामाचारी के यहाँ न जाएँ!''

चंद्रसेन ने थोड़ी देर तक सोचने के बाद योगी से कहा "स्वामी, आपकी बातों से मुझमें ज्ञानोदय हो गया किन्तु कुछ लोगों को प्रमाण मिलने पर ही ज्ञानोदय होता है। मैं रामाचारी के पास हो आता हूँ, तब तक आप यहाँ ठहर सकते हैं?''

योगी ने वहाँ ठहरने के लिए अपनी सम्मति दी।

थोड़ी देर के बाद हवा और तेज चलने लगी। चंद्रसेन राम के मंदिर गया और रामाचारी के दिये तुलसी के तीन पत्ते खाये। किन्तु उनका कोई प्रभाव नहीं हुआ। खिन्न और निराश रामाचारी से राजा ने कहा, "मेरे साथ योगी का दर्शन करने आना।''

चंद्रसेन और उनका परिवार रामाचारी सब मिलकर योगी के पास आये। योगी के दिये तुलसी के तीनों पत्तों को चबाते ही राजा एकदम स्वस्थ हो गया। उसके शरीर का हर अंग काम करने लगा। पालकी से उतरकर बड़े ही उत्साह के साथ वह इधर-उधर टहलने लगा। फिर योगी से विदा लेकर वह परिवार सहित राजधानी पहुँचा। खिन्न, निराश रामाचारी राम के मंदिर की तरफ न जाकर सीधे अपने घर की तरफ गया।

वेताल ने कहानी सुनाने के बाद राजा से कहा "बारह वर्षों तक रामाचारी घर नहीं गया, न ही अपनी पत्नी और संतान के साथ रहा। ऐसे महाभक्त के दिये तुलसी के पत्ते चंद्रसेन को स्वस्थ नहीं कर सके, उसके रोग को दूर नहीं कर सके। क्या यह विचित्र नहीं लगता? बारह वर्षों

तक बिना प्रतिज्ञा-भंग के वह दृढ संकल्प लेकर मंदिर में ही अपना जीवन बिताता रहा। उसकी निष्ठा, उसकी पूजा, असमान हैं, अद्‌भुत हैं। परंतु अंत में वह मंदिर नहीं गया बल्कि सीधे घर चला गया। कहीं वह नास्तिक तो हो नहीं गया? उसमें भगवान के प्रति विश्वास उठ तो नहीं गया? दूसरी तरफ उस योगी को ही लो। वह दस पल भी किसी मंदिर में जाकर नहीं बैठता। ऐसे व्यक्ति के दिये गये तुलसी के पत्तों से राजा का रोग दूर हो गया। क्या तुम्हे यह असंभव और विचित्र नहीं लगता? मेरे इन संदेहो का समाधान जानते हुए भी मौन रह जाओगे तो तुम्हारे सिर के टुकड़े-टुकड़े हो जाएँगे।''

राजा विक्रमार्क ने उसके संदेहों को दूर करते हुए कहा ''जहाँ तक ईश्वर व दैव सान्निध्य पर विश्वास की बात है, रामाचारी और योगी के विचार और मार्ग अलग-अलग हैं। रामाचारी दुरहंकारी है, क्यों कि उसका मानना है कि जिस भगवान पर वह विश्वास रखता है, वह केवल मंदिर में ही है और शेष सभी असत्य हैं। इसी कारण दूर प्रान्त से आये, पंडित को उसने पापी ठहराया और ज्वालामाली को भगवान मानने से इनकार कर दिया। यहाँ तक कि उसने कह दिया कि पंडित को छूना भी पाप है। परंतु जब उसके दिये हुए तीन तुलसी के पत्तों का प्रभाव राजा के स्वास्थ्य पर नही पड़ा, उसकी बीमारी दूर नही हुई तब उसका दूरहंकार टूट गया। वह समझ गया कि असल में अब ही उसे दैव सान्निध्य प्राप्त हुआ। इस सत्य को वह जान गया कि सदा मंदिर में ही बैठे रहने से दैव सान्निध्य नहीं मिलता। इसीलिए अब मंदिर में न जाकर सीधे घर गया। अब रही योगी की बात। वह नित्य संचारी बनकर संसार में घूमता रहा, क्योंकि उसकी दृष्टि में संसार ही एक मंदिर है। हर व्यक्ति में देवत्व को देखने की इच्छा रखनेवाला पुण्य पुरूष है वह। इसीलिए उसके दिये तुलसी के पत्ते राजा की बीमारी को दूर करने में काम आये। भगवान को लेकर रामाचारी और योगी के विचारों में जो भिन्नता है, जो वैविध्य है, उसे समझा जाये तो राजा के चंगे होने में न ही कोई विचित्रता दिखायी देगी न ही कोई अनहोनी।''

यों राजा के मौन-भंग में सफल वेताल शव सहित गयब हो गया और पुना पेड़ पर जा बैठा।

आधार-वसुंधरा की रचना

यक्ष पर्वत

3

(गण्डक मृग जातिवालों के साथ-साथ जाकर खड्ग जीवदत्त एक नदी के तट पर लुटेरों से मिले। आधी रात को जब खड़ग जीवदत्त उनपर आक्रमण करने ही वाले थे, तब पास की पहाड़ी गुफ़ा से एक मांत्रिक द्वारा भेजी गयी विकृत आकार की एक राक्षसी ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगी और लुटेरों की तरफ़ बढ़ती हुई आने लगी। ......अब आगे)

जलते हुए लाल-लाल अंगारों के सामने बैठकर लुटेरों का सरदार अपने अनुचरों से बातें कर रहा था। गुफ़ा से निकले उस विकृत आकारवाली की चिल्लाहटें सुनकर वह उस तरफ़ मुड़ा। उसने देखा कि एक काली कलूटी राक्षसी उन्हीं की तरफ़ दौड़ी आ रही है। उस काली कलूटी भूतनी के हाथ में जलती हुई मशाल भी है।

''यह कैसा भयानक रूप है? कोई राक्षसी है या पहाड़ी पिशाचिन ?'' कहता हुआ सरदार उठकर खड़ा हो गया। ''सरदार, लगता है, हमें निगलने बढ़ता आ रही राक्षसी है। हमें इससे अपने को बचाना होगा'', कहते हुए चार लुटेरे नदी की ओर भागने लगे। ''कायर कहीं के, रुक जाओ। इस पिशाचिन को भालों से छलनी कर देंगे। लुटेरों का सरदार चिल्लाता रहा।

परंतु, उसके अनुयायियों ने उसकी एक न सुनी। कुछ पेड़ों के पीछे भागने लगे तो कुछ नदी की ओर। इतने में वह विकृत आकारवाली अब भी सोये हुए कुछ लुटेरों पर टूट पड़ी और उन्हें लात मारने लगी। अपनी मशाल से उनके कपड़ों में आग लगा दी और वहाँ भयानक दृश्य की सृष्टि कर दी।

नदी तट पर विकृत आकारवाली की भयंकर करतूतों को देखते हुए जीवदत्त ने कहा, ''लगता है कि लुटेरों का सरदार धैर्यवान है। उसके साथ उसके कुछ अनुयायी भी हैं और वह किसी भी क्षण उनकी सहायता से पीछे से उसपर आक्रमण कर सकता है। देखना है, अब क्या होगा?''

''जीवदत्त, कहीं ऐसा न हो कि इस खलबली में स्वर्णाचारी कहीं ऊँटों के पैरों के नीचे कुचल न जाए'' खड्गवर्मा ने कहा।

इतने में जिस गुफ़ा में मांत्रिक था, उसके बीच में से बड़ी ज्वाला प्रज्वलित हुई। मांत्रिक तेल में भिगोयी गयी मशालों को उस लपट में जलाने लगा और लुटेरों पर बराबर ''शांभवी, भैरवी'' कहता हुआ फेंकने लगा।

इस नये हमले से चौंके सरदार ने अपने अनुचरों से कहा ''उष्ट्वीरों, दीखनेवाला यह विकृत आकार पिशाचिन लगती है। लगता है, ऊपर की गुफ़ा में इसके कुछ साथी भी हैं। सब लोग नदी में उतरने के लिए तैयार हो जाओ। भुट्टों के उन बोरों को नदी में फेंको। नदी के प्रवाह के साथ वे भी बहते आयेंगे और कहीं उन्हें पकड़ लेंगे।''

इतने में मांत्रिक अपने हाथ में रखी मशाल को इधर-उधर घुमाता हुआ चिल्लाने लगा ''अरे ओ जटावाले भूत, तुमने अब तक उन बदमाश लुटेरों को यमलोक नहीं भेजा? भुट्टों के बोरो को नदी में फेंकनेवाले उन लुटेरों को पकड़ो और

पेड़ पर बैठे खड्ग जीवदत्त ने इस दृश्य को देखा। वे क्षण भर के लिए स्तंभित रह गये। उसी पेड़ के नीचे जो चार गण्डक मृग जाति के आदमी थे, वे डर से थरथर कांपने लगे।

''खड्ग, यह विकृत आकारवाली न ही राक्षसी है न ही पिशाचिन, मांत्रिक ने मंत्रों का प्रयोग करके किसी को अपने वश में कर लिया और उसे इस रूप में भेजा'' जीवदन्त ने अपना संदेह प्रकट किया।

''जो भी हो, हम जो काम करना चाहते थे, उसे यह मांत्रिक कर रहा है। लुटेरे जब दुम दबाकर भाग जाएँगे तब भुट्टों के बोरे में बंधे स्वर्णाचारी को छुड़ाकर यहाँ से चले जायेंगे।'' खड्गवर्मा ने बताया।

उन्हें नदी भूत का आहार बना दो।''

मांत्रिक की चेतावनी सुनते ही भुट्टों के बोरों को अपने कंधों पर ले जानेवाले लुटेरों को वह जटाभूत पकड़ता गया और उन्हें नदी में फेंकता गया।

उसी समय एक मानव स्वर सुनायी पड़ा ''बचाओ, बचाओ मुझे नदी में मत फेंको'', किन्तु, वह बोरा, जिसमें स्वर्णाचारी बंद था, नदी में तुरंत फेंक दिया गया।

''खड्ग ने, उस आवाज़ को पहचान लिया। जो चिल्ला रहा था, वह स्वर्णाजारी ही है। चूँकि भुट्टों का बोरा डूबता नहीं, इसलिए वह नदी में बहता हुआ किनारे पर आ जायेगा। गण्डक मृग जातिवाले से कह दूँगा कि वह नदी तट से गुज़रता हुआ आगे जाए और बोरे को पकड़ ले'' कहता हुआ जीवदत्त पेड़ से उतरा।

''तुम्हें गण्डक मृग जातिवाले से जो कहना है, कहकर लौट आ। मैं इसी पेड़ पर रहकर तुम्हारा इंतज़ार करूँगा'' कहकर खड्ग वर्मा ने धनुष-बाण अपने हाथ में लिये।

जटाभूत के आक्रमणों से भयभीत लुटेरों का सरदार अपने अनुचरों से कहने लगा ''नदी के किनारे-किनारे दौड़ो, कुछ भी हो, कैसे भी हो, भुट्टों के बोरों को किसी भी हालत में हमें पाना होगा।'' कहकर वह भी दौड़ने लगा।

''मैंने देरी करके अनर्थ कर दिया। बदमाश जान बचाकर भाग रहा है'' कहते हुए खड्गवर्मा

ने लुटेरे पर बाण चलाया। पर तब तक सरदार बहुत दूर भाग चुका था, इसलिए बाण उसका कुछ बिगाड़ न सका।

अब सारा परिवेश एकदम शांत हो गया, मानों भारी वर्षा थम गयी हो। पर इतने में मांत्रिक गुफ़ा से बाहर आया, मशाल को ऊपर उठाया, इधर-उधर देखने लगा और चिल्लाने लगा ''अरे जटाभूत, कहाँ हो तुम? भुट्टों के बोरे कुछ ही सही, हाथ लगे?'' जटाभूत लंबे-लंबे पग भरता हुआ गुफ़ा की ओर निकलने ही वाला था, उसकी नज़र गण्डक मृग जातिवालों पर पड़ी। वह तुरंत ड़रावने किकियाते स्वर में चिल्लाने लगा, ''यमकिंकर! एक सींगवाले महिषों पर चढ़कर बर्छी-भाले लिये आ गये।''

जटाभूत की चिल्लाहट को सुनकर मांत्रिक थोड़ा और आगे आया और मशाले की रोशनी में इसने गण्डक मृगों और उनपर सवार लोगों को देखा। फिर चिल्ला-चिल्लाकर कहने लगा ''अरे जटाभूत , वे न ही यमकिंकर हैं, न ही एक सींगवाले महिष। वे गण्डक मृग जाति के हैं और वे गण्डक मृग हैं। पहले उन आदमियों को लपेट लो और खा जाओ। इसके बाद उन मृगों को खा सकते हो।''

खड्ग जीवदत्त जान गये कि गण्डक मृग जातिवाले आफ़त में फंसनेवाले हैं तो वे उनकी तरफ़ तेज़ी से बढ़े। खड्गवर्मा ने जटाभूत पर एक बाण चलाया। उसके शरीर में घनी जटायें थीं, इसलिए उसपर बाण का कोई असर नहीं पड़ा।

''गुरु, मुझपर कोई बाण बरसा रहा है।'' जटाभूत चिल्ला पड़ा। मांत्रिक हक्का-बक्का होकर दौड़ते आते हुए खड्ग जीवदत्त को देखकर चिल्ला उठा ''अरे ओ जटा भूत, बाण चलनेवाला क्षत्रिय लगता है। साथ जो दूसरा है, वह आधा क्षत्रिय और आधा मांत्रिक दिखता है। अपने मंत्रदंड को फेंककर अभी उनको भस्म कर दूँगा और हवा में फूंक दूँगा'' उसने छलांग मारी और गुफ़ा के अंदर चला गया।

गुफ़ा की ओर संदेहपूर्वक देखते हुए खड्गवर्मा ने जीवदत्त से कहा। जीव, लगता है, तुम्हारे इस वेष ने मांत्रिक को डरा दिया। वह जान गया कि तुम्हें मंत्र-तंत्र आते हैं, इसीलिए वह हड़बड़ाता हुआ गुफ़ा के अंदर घुस गया। अब हम क्या करें?''

''पहले हम उस मांत्रिक और जटाभूत की खबर लेंगे। ऐसा करना ही उचित होगा न?'' जीवदत्त ने पूछा।

''तब फिर किस बात की देरी? चलो, गुफ़ा में घुसते हैं'', यह कहकर खड्गवर्मा आगे बढ़ा।

दोनों ने अंदर जाने के पहले चारों ओर अपनी नज़र दौड़ायी।

गण्डक मृग जातिवाले तीन आदमी जटाभूत को भालों से चुभोने के प्रयत्नों में लगे थे। पर भूत उनके प्रहारों से अपने को बचाता हुआ 'गुरु गुरु' कहकर चिल्लाता हुआ गुफ़ा की तरफ़ भागने लगा।

गण्डक मृग जातिवाला एक आदमी मृग से उतरा और जीवदत्त के पास आकर कहने लगा ''सरकार, बड़ी गलती हो गयी। हमारे पास कोई ऐसी शक्ति होती तो उस भूत को आसानी से पकड़ लेते। लगता है, हमारे हमले का उसपर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। उसे हम घायल नहीं कर सके, क्योंकि उसका पूरा शरीर जटाओं से ढका हुआ है।''

''इस बार तुम्हारे कहे अनुसार उस भूत को रस्सी फेंककर पकड़ लेंगे। तुम लोग यहीं रहो। हम गुफ़ा के अंदर जाकर उस भूत को और उसके मालिक को भी पकड़ लेंगे।'' जीवदत्त ने कहा।

खड्ग जीवदत्त चट्टानों पर से चढ़ते हुए गुफ़ा के द्वार के पास पहुँचे, इसके पहले ही जटाभूत गुफ़ा के अंदर घुस गया और मांत्रिक से कहने लगा ''गुरु, एक सींग वाले महिषों पर सवार उन यमकिंकरों की सहायता करनेवाले दो मानव आये। सबके सब गुफ़ा की तरफ़ बढ़ रहे हैं। जल्दी उन्हें भस्म कर दो और हवा में फूंक डालो।''

थोड़ी देर बाद खड्ग जीवदत्त ने गुफ़ा में प्रवेश किया। पर वहाँ न ही जटाभूत था, न ही मांत्रिक। ''जीव, क्या ये दोनों मायावी शक्तियाँ रखते हैं?'' खड्गवर्मा ने आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा।

''अगर ऐसी शक्तियाँ इन्हें होतीं तो लुटेरों के लूटे माल को चुराने की क्यों कोशिश करते?'', जीवदत्त ने कहा। तब उन दोनों ने देखा कि एक

चौकौर पत्थर थोड़ा-सा हटाया हुआ है। उन्होंने अपनी ताकत लगाकर उसे पूरा हटाया।

खड्ग जीवदत्त ने छेद से वहाँ देखा तो उन्हें वहाँ कुछ भी दिखायी नहीं पड़ा। स्पष्ट दिखायी पड़ा कि वहाँ कोई मनुष्य नहीं हैं।

''जीव, वे दोनों बदमाश बड़ी चालाकी से बचकर भाग निकले। हमें बेवकूफ़ भी बना डाला। उनके भागने के लिए उस तरफ़ कोई गुफ़ा मार्ग होगा'', खड्गवर्मा ने कहा।

''अब क्या करें? सबेरा भी होनेवाला है'', कहते हुए जीवदत्त ने गुफ़ा में जलती हुई एक मशाल अपने हाथ में ली और उसे छेद से बाहर फेंका। उसकी रोशनी में उन्हें एक सुरंग मार्ग दिखायी पड़ा।

खड्ग और जीवदत्त दोनों छेद से फिसलकर सुरंग मार्ग में उतरे। वहाँ उन्हें पत्थरों के सिवा कुछ भी दिखायी नहीं पड़ा। खड्गवर्मा ने म्यान से तलवार निकाली और नीचे पड़ी मशाल को दूसरे हाथ में लेकर सुरंग मार्ग से होता हुआ आगे निकला। खड्ग वर्मा अपने मंत्र दंड से दीवारों को मारता जा रहा था और यह जानने की कोशिश कर रहा था कि क्या कहीं कोई रहस्य द्वार है ?

इस प्रकार सुरंग मार्ग से होते हुए वे दो मिनिटों तक चलते रहे। आख़िर वे उसके मुखद्वार पर पहुँचे। उन्होंने सामने देखा कि आगे विशाल प्रदेश है, शिथिल छोटी-मोटी इमारतें हैं और ऊपर जर्जर ऊँचा बुर्ज है।

उन शिथिल इमारतों को देखते हुए जीवदत्त के आश्चर्य की सीमा न रही। उसने कहा, "खड्ग ! सूर्योदय होने जा रहा है। देखा, सुरंग मार्ग से होते हुए हम किस प्रकार के शिथिल नगर में पहुँच गये?"

"यह शिथिल नगर है? यहाँ आख़िर है भी क्या? बस, थोड़ी-बहुत इमारतें मात्र हैं।" खड्गवर्मा ने निराशा-भरे स्वर में कहा।

"हो सकता है, बहुत पहले यह नगर का प्रधान भाग रहा हो। मांत्रिक और जटाभूत कहीं यहीं बिल में साँप की तरह छिप गये होंगे। उन्हें कैसे बाहर निकालें?", जीवदत्त ने कहा।

किन्तु मांत्रिक और जटाभूत जीवदत्त के समझे मुताबिक किसी बिल में छिपे हुए नहीं थे। वे उसी भूमि के तल में एक ऊँचे मंडप में उन्नत आसन पर बैठी हुई पुजारिणी के सम्मुख घुटने देकर बैठे हुए थे। उस पुजारिन के दोनों और भयंकर आकारवाले दो खड्गधारी सैनिक खड़े थे।

पुजारिन की आँखों से आग बरस रही थी, वह दांतों को चटखाती हुई बोली, "अधम मांत्रिक, मूर्ख भूत, अब खड़े हो जाओ। तुम्हारी मूर्खता के कारण इस पवित्र नगर का रहस्य मानवों को अब मालूम हो गया।"

"महाशक्ति, आपकी आज्ञा हो तो उन दोनों मानवों को बंदी बनाकर महाभूत पर बलि चढ़ा दूँगा", मांत्रिक ने थरथर कांपते हुए कहा।

पुजारिन ने विकट अट्टहास करते हुए कहा,

''मुँह तक आहार ला आने पर ही खा पाता है, तुम्हारा जटाभूत। महाभूत की दया से हमारे प्रयत्नों के बिना ही वे दोनों मानव इस प्रदेश में पहुँच चुके हैं। बिना जाने कि वे कहाँ से आये, उनकी बलि चढ़ाना ख़तरनाक है।''

''मालूम हो गया महाशक्ति, समझ गयें हम महाशक्ति'', कहकर वहाँ उपस्थित सब के सब चिल्ला पड़े।

पुजारिन ने सबकी ओर नज़र दौड़ाकर कहा, ''जो कहने जा रही हूँ, ध्यान से सुनो। मूर्खों, उन दोनों युवकों को पकड़ो, परंतु उन्हें कोई हानि न पहुँचाओ। मेरे पास ले आओ। सूर्योदय हो गया। वे यह देखने निकल चुके होंगे कि हमारे पवित्र भवनों में है क्या? तुम लोग छिपे-छिपे उनका पीछा करो। सुनो, वे आपस में क्या बातें कर रहे हैं। मध्यान्ह की शुभ वेला में उन्हें पकड़कर मेरे पास ले आना। तब तक उन्हें मुक्त घूमते रहने देना।''

''जैसी आपकी आज्ञा'', कहते हुए पुजारिनी के चार सेवक, मांत्रिक व जटाभूत मंडप से बाहर आये।

जटाभूत की नाराज़ी का आर-पार न था। वह उछलता-कूदता बोल उठा, ''गुरु, पीछे से जाकर उन पर टूट पड़ूँगी और उन दोनों मानवों को खा जाऊँगी। उन्हीं की वजह से महाशक्ति पुजारिन के क्रोध का मैं शिकार हुआ, गालियाँ सुननी पड़ीं।

''मेरा भी घोर अपमान हुआ।'', कहकर मांत्रिक ने एक छोटे-से चाकू को अपनी हथेली में कसकर पकड़ते हुए कहा, ''देखो, वे दोनों सुरंग द्वार के सामने बैठे हैं। हम दोनों उनकी हत्या कर देंगे और जंगल में भाग जाएँगे। पुजारिन चाहे कितनी ही मंत्र-तंत्र शक्तियाँ जानती क्यों न हो, हमें उनकी गालियाँ आगे नहीं सुननी हैं। नहीं सुनेंगे'', कहते हुए बाघ की तरह झुक-झुक कर चलता हुआ खड्ग जीवदत्त की ओर बढ़े।

(क्रमशः)

एक महान सभ्यता की झांकियाँ
युग-युग में सत्य के लिए इसकी गौरवमयी खोज

१४. अधिकार बल-तपोबल

देवनाथ ने अपने पोतें और पोती के साथ नदी के किनारे थोड़ा समय गुजारा और फिर बगीचे में जाकर सभी के साथ एक स्थान पर बैठ गये।

"वसिष्ठ बहुत ही महान ऋषिवर थे दादाजी...! पर विश्वामित्र का बरताव समझ नहीं पा रहा हूँ। एक मुनि भला कैसे दूसरे मुनि की हत्या कर देने पर तुल गये? क्या मुनि कहीं ऐसा सोच भी सकते हैं?" संदीप ने पूछा।

"भैय्या, पिताजी के सामने, अध्यापकों के सामने, घर में कोई रिश्तेदार आयें तो उनके सामने तुम भी अच्छे व विनम्र बालक की तरह बरताव करते हो। जैसे ही वे वहाँ से चले जाते हैं। मेरे पीछे पड़ जाते हो और मेरी हँसी उड़ाते रहते हो।" अपने दादा के हाथ में चाय का कप देते हुए स्यामला ने कहा।

देवनाथ हंसते हुए बोले, "तुमने जो कहा सच है, लेकिन किसी भी विषय को दो कोणों से देख सकते हैं और देखा जाना चाहिये। संदीप नटखट है, परंतु कुछ बातों में वह अच्छे व नम्र बालक की तरह व्यवहार करता है। यह तुम्हारा कथन है। इसे ही दूसरी तरह से भी कहा जा सकता है-संदीप अच्छा और नम्र बालक है, परंतु कुछ बातों में ही शरारत करता रहता है। ऐसा भी कहा जा सकता है न?"

"सुना तुमने। इसे कहते हैं विवेक!", कहते हुए संदीप ने बहन का कान धीरे से मरोड़ा।

"हाँ...! हाँ...!!, बात जब तुम्हारे अनुकुल होती है, तब उसे विवेक कहते हो और मानते हो।" कहती हुई श्यामला ने भाई का हाथ अपने कान से हटाया।

"मनुष्य का स्वभाव आधा मृग है तो आधा दैव। साधुता और क्रूरता एक ही व्यक्ति में हो सकती हैं। विश्वामित्र के विषय में यह सौ फी सदी सच है। साधारण स्थिति से वे महामुनि के स्तर तक पहुँचे। वे दयाहीन और क्रूर लगते हैं, किन्तु केवल बाहर से। किसी एक व्यक्ति के स्वाभाव पर अपना निर्णय देने के पहले उस व्यक्ति की पृष्ठभूमि तथा उसपर अकित परिस्थितियों के प्रभाव को भी सुस्पष्ट रूप से जानना चाहिये और परखना चाहिये।", देवनाथ ने कहा।

"अधिकाधिक लाड-प्यार दिखाने के कारण ही बड़े भैय्या शरारती बन गये। यह सच्चाई हमें मालूम है।

गाथा

विश्वामित्र भी जब देखो, क्रोधित रहा करते थे। छोटी-सी छोटी बात पर भी वे आग-बबूला हो उठते थे। क्या इसके पीछे कोई कारण है?'', श्यामला ने मुस्कुराते हुए पूछा।

"विश्वामित्र के क्रोध का मैं समर्थन तो नहीं कर रहा हूँ, किन्तु बहुत-सी ऐसी घटनाएँ हैं, जिनके द्वारा प्रमाणित किया जा सकता है कि वे इतना क्रोधित क्यों होते थे।'' फिर देवनाथ विश्वामित्र के क्रोध के कारण यों बताने लगे।

विश्वामित्र सत्यावेषी नहीं थे, शास्त्रों में पंडित भी नहीं थे। परंतु, उन्हे हम साधारण मनुष्य नहीं कह सकते। आदर्श शासक बनकर कन्याकुब्जा पर अपना शासन चलाया। परंतु हाँ, उनमें अहंकार की मात्रा थोड़ी बहुत अधिक ही थी। अन्य राजाओं की तुलना में उनका अहंकार आवश्यकता से अधिक ही था।

वे एक दिन आखेट खेलने गये और बहुत समय तक निर्विघ्न आखेट करते रहे। मध्यान्ह के समय विश्राम करने हेतु वसिष्ट मुनि के आश्रम में गये। मुनि ने राजा और उनके परिवार का स्वागत किया और उनका आतिथ्य सत्कार किया। सब प्रकार के रूचिकर व्यंजनों से भोज का प्रबंध किया। विश्वामित्र उन विविध व्यंजनों को देखकर चकित रह गये। उनकी समझ में नहीं आया कि इतने विविध स्वादिष्ट पकवानों की व्यवस्था एक मुनि कैसे कर सका। कुछ आश्रमवासी नदी तट पर चरती हुई एक अतिसुंदर गाय को दिखाते हुए बोले, "देखिये, नंदिनि नामक एक होमधेनु है वह। मुनि की मांगी हर इच्छा को पूर्ण करनेवाली दिव्यधेनु है वह।''

मुनि के आश्रमवासियों में संपदाओं एवं राज्य विस्तार के प्रति कोई आसक्ति या लोभ नहीं होता। ऐसे आश्रम में हर इच्छा की पूर्ति करनेवाली धेनु है, नंदिनी। विश्वामित्र सोचने लगे कि ऐसी गाय मेरे पास होती तो प्रजा पर कोई विपत्ति आने नहीं देता, हर कष्ट से उनकी रक्षा करता। साथ ही बड़ी सुगमता से अपने राज्य का विस्तार भी कर सकूँगा। उसी क्षण उन्होंने निश्चय कर लिया कि वह कामधेनु किसी भी हालत में उनकी अपनी होगी।

होमधेनु को अपने बश में करने के लिए वसिष्ठ के सामने विश्वामित्र ने प्रस्ताव भी रखा। किन्तु वसिष्ठ ने अपनी अशक्तता को जताते हुए उनके प्रस्ताव को स्वीकार नहीं किया। विश्वामित्र की इच्छा को अस्वीकार करते हुए उन्होने कहा कि वह आश्रम में रहना चाहेगी अथवा राजप्रासाद जाना चाहेगी, इसका निर्णय धेनु स्वंय करेगी। उसे शासित करने का अधिकार वे नहीं रखते।

विश्वामित्र का क्रोध वसिष्ट की इन बातों से सीमा पार कर गया। एक मुनि राजा की इच्छा का तिरस्कार करे, उसकी इच्छा का धिक्कार करे! मदोन्मत्त होकर उन्होने सैनिकों को आज्ञा दी कि गाय राजधानी ले जायी जाए। किन्तु सैनिक उसके निकट पहुँच नहीं

सके। किसी अदृश्य शक्ति ने उन्हें वहाँ से भगाया।

विश्वामित्र राजधानी लौटे और अब इस बार बड़ी सेना के साथ आये। फिर भी उनसे कुछ नहीं हो सका। होमधेनु से प्रकट सैनिकों ने उनकी सेना के छक्के छुड़ा दिये वे उनका सामना न कर सके और भागने लगे।

विश्वामित्र अपनी असहायता पर खीज उठे। वे गोधेनु के महत्व को देखते हुए अचम्भित रह गये। अपमान भार से उनका सिर झुक गया। वे किंकर्तव्यविमूढ़ हो गये।

विश्वामित्र को यह सत्य जानने में देर नहीं लगी कि वसिष्ट ने अपने अद्‌भुत तपोबल से उनकी सेना को परास्त किया। इसके लिए वसिष्ट ने मानव शक्ति का उपयोग नहीं किया। विश्वामित्र ने राज सिंहासन को तज दिया और तपस्या करने लगे। यद्यपि बहुत ही कम समय में उन्होने अद्‌भुत शक्तियाँ पायी परंतु अपने अहंकार पर विजय नहीं पा सके। राजा का दर्प अब भी उनमें मौजूद था। किन्तु अपनी अनवरत साधना से उन्होने अपने अहंकार पर भी जीत पायी।

अपनी आकांक्षा को कार्य रूप देने का आग्रह उनमें भरा पड़ा था। इसी कारण उन्होनें एक साहस-पूर्ण कार्य करने का निश्चय किया। उन्ही के जमाने में सत्यवत् नाम का एक राजा रहा करता था। उस युवराज ने चूँकि तीन पाप किये, इसलिए उसे त्रिशंकु भी कहा करते थे। वह जनता के कल्याण का विरोधी था। इसलिए उसके पिता ने उसे जंगल चले जाने का दंड दिया। जब वह जंगल में था तब घोर अकाल पड़ा। उस समय विश्वामित्र तपोमग्न थे, इसलिए उनके परिवार के सदस्यों की देखभाल करनेवाला कोई नहीं रह गया। ऐसी दयनीय स्थिति में त्रिशंकु ने उनकी सहायता की। उसी के दिये आहार से विश्वामित्र का परिवार बच गया। तपस्या से लौटे विश्वामित्र, त्रिशंकु की इस सहायता पर बहुत ही खुश हुए।

इसके बाद त्रिशंकु के पिता ने अपने बेटे को जो दंड सुनाया था, उसे वापस ले लिया। त्रिशंकु को सिंहासन पर बिठाया और स्वंय वानप्रस्थ जीवन बिताने जंगल चला गया। त्रिशंकु आदर्श राजा बनकर जनता के प्रेम का पात्र बना।

कुछ समय बाद त्रिशंकु में इच्छा जगी कि शरीर सहित स्वर्ग जाऊँ। उसने वसिष्ठ से अपनी इच्छा बतायी और इसके लिए आवश्यक यज्ञ किया। अंत में वसिष्ठ ने स्पष्ट कह दिया कि शरीर सहित स्वर्ग ज़ाने का कोई मार्ग सुनिश्चित नहीं है। शास्त्रों में भी इसके लिए आवश्यक मार्ग सुझाये नहीं गये। वसिष्ठ की ये बातें त्रिशंकु को तृप्त नहीं कर सकी। वह अन्य मुनियों की शरण में गया। परंतु किसी ने भी उसकी सहायता नहीं की। सब मुनियों ने कह दिया कि यह असंभव है। आखिर वह विश्वामित्र की शरण में गया। अपनी इच्छा जतायी। राजर्षि विश्वामित्र को लगा कि उनके लिए यह एक सुअवसर है, जिसके द्वारा वे प्रमाणित कर सकते हैं कि अन्यों की तुलना में वे कहीं महान हैं। उन्होंने इसे एक चुनौती मानी और त्रिशंकु को

शरीर सहित स्वर्ग भेजने का वचन दिया। अपनी तपोशक्ति पर उन्हें भरपूर विश्वास था।

उन्होंने यज्ञ किया। अपनी संपूर्ण तपोशक्ति अर्पित कर दी और त्रिशंकु को स्वर्ग के द्वारों तक पहुँचाया। पर इंद्र आदि देवताओं ने त्रिशंकु को स्वर्ग के अंदर प्रवेश करने से रोका और उसे नीचे गिरा दिया।

विश्वामित्र ने देखा कि त्रिशंकु नीचे गिर रहा है और उन्हीं का ध्यान कर रहा है तो वे चिल्ला उठे, "ठहर जाओ!"। त्रिशंकु वहीं ठहर गया। विश्वामित्र ने अपनी तपोशक्ति से एक नूतन स्वर्ग की सृष्टि की।

ध्यानपूर्वक सुनते हुए संदीप ने पूछा, "दादाजी...! क्या अब भी त्रिशंकु स्वर्ग में है?", श्यामला ने भी कुतूहल वश प्रश्न किया।

"नहीं। पर त्रिशंकु स्वर्ग जा पाया। किन्तु इसका पता नहीं कि वह शरीर सहित जा पाया या नहीं। इन घटनाओं को केवल कथाओं के रूप में लेने की भूल हमें नहीं करनी चाहिये। इनके अंतरार्थी पर हमें ध्यान देना चाहिये। यह कथा हमें सूचित करती है कि अधिकार बल से तपोबल, भौतिक शक्तियों से आध्यात्मिक शक्तियाँ महान हैं, शक्तिशाली हैं। साधारणतया देखा गया है कि सन्यासी, योगी, ऋषि भौतिक देह को आध्यात्मिक प्रगति के मार्ग में बाधक मानते हैं। किन्तु ऐसे भी साहसी और आशावादी रहे, जिनकी दृष्टि में आध्यात्मिक साधना के लिए आत्मा जितनी आवश्यक है, उतना ही आवश्यक है शरीर भी। उनका विश्वास है कि शरीर को भी स्वर्ग प्राप्ति हो सकती है। ऐसे आशावादियों के सपने शायद कल ही पूरे हो सकते हैं, वे वास्तविक बन सकते हैं।

कल! आश्चर्य प्रकट करते हुए संदीप ने पूछा, "मेरे कल ही का मतलब भविष्य से है। मनुष्य के निर्मल चैतन्य से शरीर का तत्व ही इस काल में बदल सकता है, इसकी गुंजाइश है, यह सत्य बीसवीं शताब्दी में श्री अरविंद ने हमारे सम्मुख प्रस्तुत किया। हमारा यह वर्तमान साधारण जीवन, दिव्य जीवन के रूप में परिणत होगा।"

जीवन-मरण के वश का हमारा यह स्थूल शरीर नूतन शुभदायक लक्षणों को अपनायेगा। वह तब अद्‌भुत चैतन्य निवास बनेगा। श्री अरविंद का यह विश्वास है।

"तो इसका यह मतलब हुआ कि हमें पहले अपने में अद्‌भुत चैतन्य की खोज करनी चाहिये। यही इसका मतलब है न दादाजी?", श्यामला ने गंभीरतापूर्वक पूछा।

"हाँ...! बिटिया, तुमने ठीक कहा!", कहते हुए देवनाथ ने अपनी पोती को बड़े प्यार से गले लगाया।

(क्रमशः)

इस माह जिनकी जयन्ती है

डॉ. राममनोहर लोहिया

सन् १९३३ में मद्रास का एक दृश्य एक नौजवान जर्मनी से आए एक जहाज से उतरा जो डाक्टरेट कर चुका था। उसके रिश्तेदारों ने उसे उच्च शिक्षा प्राप्त करने हेतु विदेश जाने में सहयोग किया। भारत वापस आने पर उसके पास इतना पैसा नहीं था कि वह अपने गाँव वापस जाए। वह मजबूर था। अचानक उसे एक उपाय सूझा। वह "द हिन्दू" समाचार पत्र के कार्यालय गया। "यदि मैं आपके लिए कोई लेख लिखूँ तो क्या आप उसका कुछ पारिश्रमिक देंगे?" संपादक से पूछा। संपादक के सहमत हो जाने पर राजनीति के ऊपर एक लेख लिख दिया। प्राप्त पैसों से उसे टिकट खरीदने में आसानी हुई।

यह नौजवान डॉ. राममनोहर लोहिया थे, जो बाद में चलकर एक महान समाज विचारक, मानवतावादी, और राजनीतिज्ञ के रूप में प्रसिद्ध हुए।

लोहिया का जन्म २३ मार्च १९१० को राजवाड़ा राज संघ के अकबरपुर गाँव में हुआ। उनका राजनीतिक जीवन उनकी १० वर्ष की आयु से ही आरम्भ हो गया था। वे स्वदेशी गतिविधियों में भाग लेते और उनका आयोजन भी करते थे। खादी पहनना, विदेशी कपड़ों की होली जलाना तथा सामाजिक अवज्ञा आदि उनके कार्यों में शामिल था। लोहिया ने गांधीजी के सत्याग्रह में भी भाग लिया। लेकिन वे अँधी भेड़ की तरह किसी का अनुकरण नहीं करते थे।

हिन्दू विश्व विद्यालय बनारस के विद्यार्थी जीवन ने उन्हें एक मेधावी छात्र, और उच्च कोटि के वक्ता के रूप में प्रसिद्ध कर दिया। सन् १९२९ में वे अखिल भारतीय विद्यार्थी कांग्रेस संघ के अध्यक्ष चुने गए।

लोहिया ने १९३४ में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में प्रवेश किया। जब कुछ नौजवानों ने कांग्रेस से अलग होकर कांग्रेस समाजवादी पार्टी बनाई तो लोहिया यहाँ से छपनेवाले समाचार पत्र 'कांग्रेस सोसिलिस्ट' के संपादक बना दिए गए।

१९४२ में जब भारत छोड़ो आन्दोलन को प्रसिद्धि प्राप्ति हुई तो लोहिया ने काफी जोशीले पर्चे एक गोपनीय छापे खाने में छापे। उन्होंने एक गोपनीय रेडियो स्टेशन भी बम्बई से आरम्भ किया, जिसे कांग्रेस रेडियो कहा जाता था। जिसने लोगों को आन्दोलन में भाग लेने के लिए उत्साहित किया। ब्रिटिश जेल और यातनाएँ उनका कुछ न बिगाड़ सकीं, वे तब भी निर्भय रहे।

लोहिया ने अंतर्राष्ट्रीय राजनीति स्तर पर भी अपनी छाप छोड़ी। १९५२ में प्रथम एशियन सोसलिस्ट संघ की स्थापना में सहयोग किया।

१९५३ में उन्होंने अन्य जाने-माने नेताओं के साथ मिलकर प्रजा सामाजिक दल का निर्माण किया। उन्होंने भारतीय भाषाओं के उपयोग पर बल दिया और जाति-पांति के भेद रहित एक समाज की स्थापना का प्रचार किया।

उत्तर प्रदेश के फरूख्खाबाद विधानसभा से वे १९६३ के चुनाव में विजयी हुए और वे संसद में अपने विचार बड़ी दृढ़ता के साथ प्रस्तुत करते रहे। वे भारत के एक महान सांसद थे।

लोहिया ने अनेकों उन्नति कार्यों के लिए भी आवाज उठाई जैसे कि नहर खोदना और बाँध बनाना आदि। १२ अक्टूबर १९६७ में उनका देहान्त हो गया। १९४० में सरकार के विरोध में 'हरिजन' नाम से प्रकाशित उनके लेख के लिए सरकार ने जब उन्हें गिरफ्तार कर लिया था, उस समय गांधीजी ने कहा, "मैं इनके सिवा किसी और व्यक्ति को नहीं जानता जो लोहिया से अधिक बहादुर और सादगीपूर्ण हो। इन्होंने कभी भी हिंसा को उत्तेजित नहीं किया। जो भी किया उससे उनकी शक्ति और उनका सम्मान बढ़ता गया।"

२०वीं शताब्दी में भारत

३. पड़ोसियों के साथ युद्ध और शांति

(१९५१-१९७२)

स्वतंत्र भारत के प्रथम मंत्रिमंडल ने विश्व युद्ध तथा देश के बँटवारे से पड़े प्रतिकूल प्रभाव के चलते आर्थिक स्थिति के सुधार को महत्वपूर्ण समझा। योजना आयोग ने जुलाई १९५१ में प्रथम पंचवर्षीय योजना की घोषणा की। इस योजना का उद्देश्य देश में राष्ट्रीय संपत्ति की वृद्धि, रहन-सहन में सुधार और रोजगार के अवसर प्रदान करना था। कृषि को प्राथमिकता दी गयी। योजना आयोग का नेतृत्व प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने अध्यक्ष पद तथा प्रो. पी.सी. महालानोबिस ने उपकुलपति के रूप में किया।

जबकि भारत और पाकिस्तान ने कश्मीर में लड़ाई समाप्त करने का निर्णय ले लिया, लेकिन राजवाड़े एस्टेट अभी भी दुःखदायी स्थिति में थे। राष्ट्रीय बैठक में यहाँ एक अलग संविधान की मांग की गयी। ब्रिटेन और यू.एस.ए. ने सलाह दी कि एस्टेट के भारत में विलय से ही संगठित राष्ट्र बन सकता है। भारत ने सोचा कि यह राष्ट्र संघ के खिलाफ होगा, और पाकिस्तान अपनी सेना पहले से अधिकृत केन्द्रशासित राज्यों से हटा ले। कश्मीर के महाराजा ने चुनाव की घोषणा की। भारत ने ७५ स्थानों के साथ संसद के निर्माण की बात स्वीकार कर ली। सभी ७५ प्रत्याशी जो राष्ट्रीय संघ द्वारा परिचित किए गए उन्हें बिना विरोध चुन लिया गया।

३१ अक्टूबर १९५१ को हुई इसकी प्रथम बैठक में संसद ने सुचारु रूप से एस्टेट का भारत में विलय कर दिया।

प्रथम सामान्य चुनावों से राष्ट्र लगभग छः माह तक व्यस्त रहा। चुनाव की तैयारी अक्टूबर १९५१ में आरम्भ हुई और उसे पूरा होते-होते फरवरी १९५२ हो गया। लोकसभा की कुल ४८९ सीटों के चुनाव हुए, साथ में २२ राज्यों के ३८२३ विधानसभाओं के लिए भी। लगभग ७५ दलों ने १७००० प्रत्याशियों को चुनाव में खड़ा किया। ६००० से अधिक प्रत्याशी निर्दलीय रूप से चुनाव लड़े। कांग्रेस ने ३६३ स्थानों पर विजय प्राप्त की। कम्यूनिस्ट पार्टी कुछ अन्य दलों के साथ मिलकर ४१ सीट हासिल कर सकी, जो काफी मजबूत विपक्षी दल बनी। जवाहरलाल नेहरु को प्रधानमंत्री बनाया गया।

भाषा के आधार पर राज्य की माँग

६ मई को डॉ. राजेन्द्र प्रसाद को राष्ट्रपति तथा डॉ. राधाकृष्णान को उपराष्ट्रपति चुना गया। १२ मई को संसद का गठन हुआ। जी.वी. मावलांकर को प्रथम लोकसभा वक्ता बनाया गया। इससे पूर्व २७ मार्च को २१६ सदस्यों की राज्य सभा का गठन हुआ। कांग्रेस ने १८ राजवाणों में अपना मंत्रिमंडल स्थापित किया।
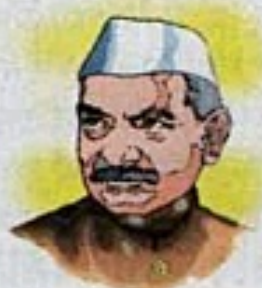
डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

सन् १९५२ नई राजनीतिक दलों के निर्माण का वर्ष था। जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में समाजवादी पार्टी का गठन हुआ, जिसने भारतीय राजनीति में गाँधीबाद का समर्थन करते हुए मई माह में पचमरही में एक बैठक की। जिससे किसान मजदूर प्रजापार्टी से निकटता बढ़ी। सितम्बर में ये दोनों मिलकर प्रजा समाजवादी पार्टी बन गयीं।

जयप्रकाश नारायण

बम्बई में जे.वी. कृपलानी अध्यक्ष के पद के लिए चुने गए। जयप्रकाश नारायण, आचार्य नरेन्द्रदेव, राममनोहर लोहिया तथा अशोक मेहता आदि संस्थापक नेता थे।

पहली बार राजवाड़ा राज्य से अधिक संख्या में बोली जानेवाली भाषा के आधार पर अलग राज्य की माँग का मामला सामने आया। जब पोट्टी श्रीरामुलु ने तेलुगु भाषायी क्षेत्र के लिए अलग आंध्रप्रदेश की मांग करते हुए अनशन आरम्भ किया। दिसम्बर में उनकी मृत्यु के तुरन्त बाद सरकार ने राजवाड़ा राज्य मद्रास से ११ जिलों के साथ १९५३ में आंध्रप्रदेश को अलग कर दिया और उसकी राजधानी करनूल बनायी। १९५६ के दौरान जब राज्यों को पुनः संगठित किया जाने लगा तो हैदराबाद के नौ जिलों को मिलाकर आंध्र प्रदेश बनाया गया और हैदराबाद उसकी राजधानी।

१९५३ में कश्मीर की राजनीति ने एक नया मोड़ लिया। उसी वर्ष मई माह में हुई राष्ट्रीय कांग्रेस की बैठक में प्रधानमंत्री शेख अब्दुल्ला की नीतियों को आठ सदस्यों में से सात ने इन्कार कर दिया, जो पाकिस्तान के साथ किसी गोपनीय सलाह में दोषी पाए गए थे। राज्यपाल सदर-ई-रियाजत ने उन्हें बर्खास्त करके बक्शी गुलाम मुहम्मद को प्रधानमंत्री बना दिया। शेख को राजद्रोह में गिरफ्तार कर लिया गया।

शेख अब्दुल्ला

दो देशों के समझौते के हल पर पहुँचकर भारत चीन संबंध स्थापित हुआ। जिसमें सांस्कृतिक आदान-प्रदान, कोई भी सैन्य युद्ध को विराम देना, कृषि को बढ़ावा देना और शांति को बनाए रखना

जैसी बातें अनुबंध पत्र पर लिखी गईं। बाद में इसे पंचशील के नाम से जाना गया। जवाहरलाल नेहरु तथा चीन के प्रधानमंत्री चाऊ-एन-लई ने २८ जून १९५४ को इस अनुबंध पर हस्ताक्षर किए। अक्टूबर में नेहरु चीन यात्रा पर गये। ४ वनम्बर १९५४ को जब फ्रांस ने पाँडीचेरी, माहे, कारैकाल और यमन में हथियार डाल दिया तो इन्हें मिलाकर केन्द्रीय प्रशासनिक केन्द्रशासित राज्य पाँडीचेरी बना दिया गया। परन्तु पूर्ण रूप से यह तभी प्रदान किया गया जब २८ मई १९५६ में भारत और फ्रांस ने एक समझौते पर हस्ताक्षर किए।

- ११ मई १९५१ में राष्ट्रपति बाबू राजेन्द्र प्रसाद ने नव-निर्मित सोमनाथ मंदिर का बनारस में उद्घाटन किया।
- प्रथम एशियन खेल ४ मार्च १९५१ को दिल्ली में हुआ। ११ देशों के लगभग ४९० खिलाड़ियों ने भाग लिया। जापान इस खेल में प्रथम रहा और भारत द्वितीय।
- प्रथम सर्वेक्षण समिति ने स्वतंत्र भारत में १९५१ में ७२० भाषाओं के बारे में बताया जो प्रयोग में लायी जाती हैं।

विश्व में और कहाँ.....

- आदमी द्वारा जीते हुए आकाश में उपग्रहों का आरम्भ हुआ। ४ अक्टूबर १९५७ में रशिया ने 'स्पुटनिकल' बनाया जो पृथ्वी के वातावरण से आगे चला गया। ३ नवम्बर को स्पुटनिकल-२, एक कुत्ते लैका को यात्री के रूप में लेकर अंतरिक्ष में गया। यू.एस.ए. ने बैंगुआर्ड नामक एक रॉकेट छोड़ा जो वातावरण में फट गया। आरम्भिक असफलता के चलते-भी, यू.एस.ए. ने दिसम्बर में ग्रह पथ पर एक्सप्लोरट-१ को छोड़ा।

- 'डेनिस दी मेनस' नामक प्रसिद्ध कॉमिक पात्र प्रथम बार यू.एस. के समाचार पत्र में दिसम्बर १९५१ में प्रकाशित हुआ।
- पहली बार ६ मई १९५४ को आक्सफोर्ड यूनिवरसिटी के एक विद्यार्थी रोजर बैनिस्टर ने ३.५९.४ मिनट में एक मील की दौड़ लगाई।
- १८ जुलाई १९५५ को यू.एस.ए. में डिसनीलैंड लोगों के लिए अनाहिम में खोल दिया गया।
- २७ अगस्त, १९५५ को 'गिनिज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड' का प्रथम संस्करण लंदन में प्रकाशित हुआ।

समाज की सामाजिक पद्धति

जनवरी १९५५ में मद्रास के एक छोटे स्थान आवडी में हुए ६०वें कांग्रेस सम्मेलन में समाज में समाजवादी तरीका लाने की घोषणा की। फरवरी में अपने चुनाव के दौरे के समय आंध्रप्रदेश की यात्रा पर आए जवाहरलाल नेहरु ने कहा कि वे पूरे देश में समाजवाद स्थापित करना चाहते हैं।

भारत ने एक दूसरा सराहनीय कदम उठाया जब, भारत ने दुनिया की दूसरी बड़ी हस्ती सोवियत संघ के साथ समझौते पर हस्ताक्षर किया। उस देश से एक निमंत्रण को स्वीकार करते हुए जून १९५५ को प्रधानमंत्री ने रूस की यात्र की। यह यात्रा १५ दिनों से भी अधिक चली। २२ जून को एक घोषणा की गई कि इन दोनों देशो ने पंचशील का अनुकरण करते हुए सांस्कृतिक, आर्थिक तथा वैज्ञानिक क्षेत्रों में उन्नति के लिए बॉन्ड पर हस्ताक्षर किया। यह अनुबंध तब और मजबूत हो गया जब राष्ट्रपति बुलगानिव और प्रधानमंत्री ख्रिश्चिव ने नवम्बर में भारत की यात्रा की।

१९५३ में राज्यों के पुनः संगठन का कार्य आरम्भ हुआ था, जिसकी रिपोर्ट ३० सितम्बर १९५५ को प्रस्तुत की गई। इन १६ राज्यों की स्थापना अधिक लोगों द्वारा बोली जाने वाली भाषा के आधार पर हुई।

१ नवम्बर १९५६ में जिन राज्यों की पुनः स्थापना हुई वे असम, आन्ध्रप्रदेश, उत्तर प्रदेश, बम्बई, पंजाब, पश्चिमी बंगाल, मध्यप्रदेश, जम्मू और कश्मीर, बिहार, उडीसा, राजस्थान, मद्रास, मैसूर, और केरल तथा केन्द्रशासित दिल्ली, अन्डमान-निकोबार, लक्ष्द्वीप, त्रिपुरा तथा मणिपुर थे।

विश्व में पहली बार केरल में कम्यूनिस्ट पार्टी विजयी हुई और स्थापित की गई। यह वर्ष १९५७ था। १२६ सीटों में से कम्यूनिस्ट पार्टी को ६० सीटों पर विजय प्राप्त हुई। कम्यूनिस्ट पार्टी द्वारा समर्थन प्राप्त ५ अन्य निर्दलीय प्रत्याशी भी चुनाव जीत गए। कांग्रेस को मात्र ४३ सीटें ही मिली। ई.एम.एस. नम्बूदरीपाल मुख्यमंत्री बने।

ई.एम.एस. नम्बूदरीपाल

१९५७ में ग्रामीण प्रशासन में पंचायती राज जो गणतंत्र का एक छोटा हिस्सा है, स्थापित किया गया। आन्ध्रप्रदेश और राजस्थान में पहली बार पंचायती राज की स्थापना हुई।

कश्मीर समस्या लगातार उसी प्रकार धधकती रही। १९५८ के आरम्भ में ही शेख अब्दुल्ला जेल से रिहा हुआ। उसने जन मोर्चे का नेतृत्व सम्भाला और कश्मीर के भारत में विलय का खण्डन किया जैसा की जनमोर्चे ने पहले ही विलय को अस्वीकार कर दिया था। शेख को एक बार फिर से राजद्रोह का आरोप लगाकर गिरफ्तार कर लिया गया।

इससे पूर्व कि कश्मीर समस्या पर कोई समाधान पाया जा सके जो पाकिस्तान द्वारा बढ़ाया जा रहा था, भारत के दूसरे भाग में तिब्बत के आध्यात्मिक संत दलाई लामा गिरफ्तारी और कैद से बच निकले। यह चीन द्वारा किया गया, जबकि भारत उसके साथ पूरी तरह मित्रता का व्यवहार बनाये हुए था।

- २९ मई १९५३ में भारत का तिरंगा पहली बार विश्व के सबसे ऊँचे पर्वत पर लहराया, जब न्यूजीलैण्ड के एडमन्ड हिलैरी और शेरपा टेन्जिंग नार्गे ने माउण्ट एवरेस्ट पर चढ़ाई पूरी कर ली। उन्होंने ब्रिटेन, नेपाल तथा सोवियत राष्ट्र का झंडा भी वहाँ फहराया।
- जून १९५४ में भारत ने देश के उच्च पदकों की घोषणा की, जैसे भारत रत्न, पद्म विभूषण, पद्म भूषण और पद्म श्री आदि। प्रथम भारत रत्न से सम्मानित किए गए, डॉ. एस. राधाकृष्णन, सी. राजगोपालाचारी, और सी.वी. रामन।

- १९५५ में सत्यजीत रे की ''पथेर पांचाली'' नामक फिल्म का उद्घाटन लंदन में हुआ। यह फिल्म भारत के फिल्म निर्माण में एक मील का पत्थर बन गई।

विश्व में और कहाँ.....

- सन् १९५९ में यू.एस.ए. ने अंतरिक्ष यानों के निर्माण में एक महत्वपूर्ण कदम उठाया और एक के बाद एक उपग्रह पृथ्वी के आसपास छोड़े गए। ये उपग्रह दो बंदरों को लेकर अंतरिक्ष में ३६० मील ऊपर गए और १७०० मील की यात्रा की।
- चन्द्रमा पर स्थित वातावरण की सूचना देते हुए ३५ घंटे ग्रहों की कक्षाओं का चक्कर लगाकर सोवियत रूस का लुबिक-२ नामक उपग्रह ४ सितम्बर १९५९ को चन्द्रमा पर उतरा।

◆ १९५८ में विलियम हिगिनबॉथम द्वारा न्यूयार्क में विडियो गेम्स का आविष्कार किया गया। पहला खेल टेबल टेनिस था, जो 'पाँग' कहा जाता था। इसे बाजार में आने तथा बिक्री उत्पाद बनने में १४ वर्ष लग गए।

◆ वेस्टमिन्स्टर हाल में रखी गई 'जुलेस रिमेट' ट्रॉफी चोरी हो गई, जो विश्व फुटबाल कप के विजोताओं को देनी जानी थी। यह रहस्यमयी चोरी २० मार्च १९६६ को हुई। यह ट्राफी एक पालतू कुत्ते द्वारा दक्षिणी लंदन के एक उद्याने में प्राप्त हुई।

पुर्तगालियों से गोआ की आज़ादी

दलाई लामा ने १७ मार्च को तिब्बत छोड़ दिया और लगभग १५ दिनों बाद भारत पहुँचे। उन्होंने अपने और अपने अनुयायियों की रक्षा हेतु सहायता माँगी। भारत ने उन्हें स्वीकार किया और उन्हें उत्तरप्रदेश में ठहराया गया। चीन ने इसे आड़े हाथों लिया और उस देश के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप करने के लिए भारत को दोषी ठहराया। चीन ने सितम्बर में एक नक्शे को प्रकाशित करते हुए उसमें दिखाया कि १३२००० वर्ग कि.मी. का क्षेत्र लदाख से असाम तक, उस देश का भाग है। भारत ने इसका विरोध किया और इसपर बातचीत करने का निर्णय लिया।

दलाई लामा

तब तक एक अन्य राजनीतिक दल का गठन कांग्रेस के वरिष्ठ नेता सी. राजगोपालाचारी द्वारा किया गया। मद्रास में जून १९५९ में हुई अखिल भारतीय कृषक संघ की बैठक में नेहरु की नीतियों का विरोध किया गया। जिसमें भूमि सुधार और सहयोग, कृषि और स्वतंत्र पार्टी के स्थापना की घोषणा कर दी। यह घोषणा कांग्रेस के गरम दल के लोगों ने की। इसकी प्राथमिक बैठक अक्टूबर में हुई थी, जिसमें ११ राज्यों के लगभग ७५० सदस्यों ने भाग लिया। पार्टी को जमींदारों तथा राजावाड़ा राज्यों से समर्थन मिला।

सी. राजगोपालाचारी

बम्बई में गुजराती और मराठी बोलने वालों के लिए अलग-अलग राज्यों की माँग करते हुए प्रदर्शन होने लगे। १८ मार्च १९६० को बाम्बे संसद में बाम्बे के पुनर्गठन का प्रस्ताव पारित हो गया। १ मई को गुजरात, और महाराष्ट्र क्रमशः अहमदाबाद और बम्बई राजधानी बनाकर अलग-अलग राज्य बना दिए गए।

भारत और चीन के बीच बराबर वाद-विवाद के चलते चीन के प्रधानमंत्री चाऊ-एन-लाई मार्च १९६० में दूसरी बार भारत दौरे पर आए। भारत में सत्ताधारी पार्टी तथा विरोधी पार्टियों ने किसी भी हाल में चीन द्वारा अधिकृत केन्द्रशासित प्रदेशों को देने से मनाकर दिया। भारत के रक्षा मंत्री वी.के. कृष्णा मेनन तथा चीन के विदेश मंत्री के बीच हुई बातचीत से सामान्यतः सभी विरोधी पार्टियों ने हल ढूँढने का प्रयास किया, परन्तु चीन ने आक्साई चीन के भीतर उनके उद्योग में आनेवाले क्षेत्र को छोड़ने से मना कर दिया।

१८ सितम्बर १९६१ का दिन भारत के लिए अच्छा था। २४ घंटे में भारतीय सेना ने गोआ दमन और द्वी को पुर्तगालियों से आजाद करा लिया। गोआ को केन्द्रशासित राज्य बनाने के लिए तीन क्षेत्रों का विलय किया गया। प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरु ने नई बस्तियों के पद चिन्ह मिटा देने की बात

को समर्थन दिया।

तीसरा सामान्य चुनाव १९६२ में हुआ जिसमें कांग्रेस ने केन्द्र में फिर से सत्ता हासिल की और लगभग सभी राज्यों में भी। लोकसभा में उसे ३६१ सीटें मिली। २९ सीटों के साथ भारतीय कम्यूनिस्ट पार्टी मुख्य विपक्षी दल बनी। २८४२ सीटों में से राज्य विधान सभाओं में कांग्रेस को १६५९ सीटें मिली। कम्यूनिस्ट को १५३, स्वतंत्रता को १६६, और जन संघ को ११६ सीटें मिली। १० अप्रैल को फिर से जवाहरलाल नेहरु प्रधानमंत्री बन गए।

- २० जनवरी १९५७ को भारत का पहला अणु शोध कार्य अप्सरा का उद्घाटन हुआ।

- १ अप्रैल १९५७ को भारत ने दशमलव विधि आरम्भ किया। धन की सबसे छोटी इकाई एक नया पैसा।
- इसी वर्ष में १४ नवम्बर को जवाहरलाल नेहरु के जन्म दिन पर प्रति वर्ष बाल दिवस मनाने का निर्णय लिया गया।
- नवम्बर १९५७ में ही तारा चेरियन भारत की प्रथम महिला मेयर (मद्रास) बनीं।

विश्व में और कहाँ.....

- विश्व की प्रथम महिला प्रधानमंत्री श्रीलंका की सिरीमावो भन्डारनायके ने २१ जून १९६० को कार्यालय सम्भाला।
- १९६१ में मानव की अंतरिक्ष यात्रा वास्तविक बन गई जब सोवियत उपग्रह वास्टोक-१ में बैठकर यूरी गैगटीन ने एक घंटा अड़तालीस मिनट में १९० मील की यात्रा की और १२ अप्रैल को पृथ्वी पर वापस आ गए।
- एक माह के भीतर ही यू.एस.ए. ने ५ मई को फ्रीडम-७ नामक अंतरिक्ष-यान ने प्रथम खगोली एलन शेपार्ड को बिठाकर अंतरिक्ष में भेजा। जुलाई में ब्रम्हाण्ड वेत्ता विरजिन ग्राहम अंतरिक्ष में गए और अगस्त में खगोल शास्त्री हेरमैन टिटो ने पूरे २४ घंटे अंतरिक्ष में बिताए।

- चिकित्सा के इतिहास में एक मील पत्थर तब स्थापित हुआ जब दक्षिणी अफ्रीका के केपटाउन शहर में डॉ. क्रिशिचमन बर्नार्ड द्वारा हृदय स्थानांतरण का सफलतापूर्वक ऑपरेशन किया जा सका। यँह ३ दिसम्बर १९६७ में हुआ, जिसमें डॉ. को सहयोग करने के लिए तीस डाक्टर और नर्सेज मौजूद थीं। जिस महिला ने अपना हृदय दान कर दिया, वह एक कार-दुर्घटना में मारी गई थी, परन्तु उसके हृदय में कोई घाव नहीं था। एक हृदय के सहारे वह व्यक्ति १८ दिनों तक जीवित रहा, परन्तु बाद में फेनीमोनिया से ग्रस्त होकर मर गया।

नेहरु युग का अंत

१९६२ में भारत को एक बड़े पैमाने पर चीन से युद्ध करना पड़ा, जब तिब्बत को कब्जे में लेने के बाद चीन भारत की सीमा की ओर मुड़ा और उपद्रव करने लगा। सन् १९६२ की मई जून में चीन लद्दाख से होते हुए जम्मू और कश्मीर पार कर गया। पाकिस्तान ने चीन से दोस्ती करके उस वर्ष मई में गिलगिट का हिस्सा पाकिस्तान को दे दिया। भारत ने उसका विरोध किया। इस प्रकार चीन ने कहा कि भारत के साथ सीमाओं के बारे में कोई अनुबंध उसका नहीं था। चीन के प्रधानमंत्री का वादे से मुकर जाना १९५६ में हुए कश्मीर विलय की दिलाता गया।

२० अक्टूबर को चीनी सेना भारत के पूर्वी-उत्तरी सीमा एजेन्सी में प्रवेश कर गई। लगभग ३०,००० चीनी सिपाही अक्साई चीन पार कर गए और असाम की ओर बढ़ने लगे। भारत को कुछ भी पता न चला। बहुत अधिक ठंड होने के कारण भारतीय सेना आकस्मिक आक्रमण का सामना न कर सकी। भारत ने आपातकालीन की घोषणा कर दी और जवाहरलाल नेहरु ने रक्षा मंत्रालय अपने हाथ में ले लिया क्योंकि मंत्रिमंडल से बी.के. कृष्णा मेनन ने इस्तीफा दे दिया। यू.एस.ए., ब्रिटेन, कनाडा, पश्चिमी जर्मनी तथा आस्ट्रेलिया ने सैन्य सहायता दी। भारत इस प्रकार आधे अतिक्रमण से निपटने में समर्थ हो गया। २१ नवम्बर को चीन ने बिना किसी पूर्व जानकारी के दोस्ती का हाथ बढ़ाया। जो देश सहयोगी नहीं थे जैसे श्रीलंका, बर्मा, कम्बोडिया, इन्डोनेशिया, घाना तथा गणतंत्र अरब संघ आदि ने कोलोम्बो में एक बैठक की। जब भारत ने उनके युद्ध समाप्त करने के प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया तो चीन ने उन्हें अस्वीकार कर दिया। जब लड़ाई समाप्त हुई तो लदाख में ३६,००० वर्ग कि.मी. तथा नेफा सीमा पर ५१८० वर्ग कि.मी. भूमि चीन के पास ही रह गयी।

के. कामराज

तमिलनाडु के मुख्यमंत्री के. कामराज जो एक कांग्रेसी नेता थे, ने सभी के समक्ष यह प्रस्ताव रखा कि जो लोग पार्टी में १० वर्षों से अधिकारिक पद सम्भाले हुए हैं, वे इस्तीफा देकर पार्टी का कार्यभार सम्भालें। 'कामकाज योजना' का उद्घाटन १० अगस्त १९६३ में हुआ। उन्होंने अपने पद से इस्तीफा देकर एक उदाहरण प्रस्तुत किया। मंत्रीमंडल के छः मंत्री जैसे मोरारजी देसाई तथा जगजीवन राम ने भी अपने पद से त्याग पत्र दे दिया। पाँच राज्यों के मंत्री ने भी इस्तीफा दे दिया।

नेहरु युग, जिसने भारतीय राजनीति में एक अमिट छवि स्थापित की, का अंत २७ मार्च १९६४ को हुआ। प्रधानमंत्री भुवनेश्वर सत्र के दौरान बिमार पड़े। वे सामान्य चिकित्सा से ठीक न हो सके।

इस प्रकार वे लगातार बिना आराम किए काम करते रहे। देहरादून में छुट्टी बिताने के बाद वे २६ मई को वापस आ गए। अगली सुबह ही उनकी हालत काफी खराब हो गई और २ बजे दिन को उनका देहान्त हो गया। राष्ट्र ने उन्हें १९५५ में भारत रत्न से विभूषित किया था। उन्हें बच्चों से विशेष प्यार था, जिनके लिए वे 'चाचा' नेहरु थे।

- कलकत्ता के मिहिर सेन ने २७ सितम्बर १९५८ को १४ घंटे ४५ मिनट तैरकर इंगलिश चैनल को पार कर लिया। वे प्रथम भारतीय और एशियन बने, जिन्होंने डॉवेर से क्लासिस (फ्रांस) तक तैराकी की। यह दूरी ३४ कि.मी. की होती है।
- १ अक्टूबर १९५८ को भारत ने भार-तोल के लिए कि.ग्राम पद्धति आरम्भ की।
- विनोबाभावे को १९५८ में फिलीपिन्स से मैगसायसे पुरस्कार प्राप्त हुआ।
- २९ सितम्बर १९५९ में भारत की आरती शाह ने प्रथम महिला के रूप में इंगलिश चैनल को पार किया।
- १९६१ में खेल-कूद में अहम भूमिका के लिए अर्जुन पुरस्कार की घोषणा की गई।
- १३ मई १९६२ में डॉ. राधाकृष्णन भारत के द्वितीय राष्ट्रपति बने। इसी वर्ष उनके जन्मदिन ५ सितम्बर को प्रतिवर्ष शिक्षक दिवस के रूप में मनाने का निर्णय लिया गया।
- २९ सितम्बर १९६२ को एशिया के सबसे बड़े और विश्व में द्वितीय स्थान पर, बिरला तारामण्डल कलकत्ता में खोला गया।

विश्व में और कहाँ.....

- सोवियत लूना-९, ३ फरवरी १९६६ को चांद पर उतरा। इसने मनुष्य को चांद पर उतरने का रास्ता बताया। उपग्रह ने वहाँ का चित्र ट्राँसमीटर द्वारा धरती पर भेजा।

- कम्प्यूटर चलाने के लिए 'माउस' का अविष्कार डाउगलस गिलबेर्ट द्वारा १९६८ में किया गया।
- नोबल पुरस्कार में अर्थशास्त्र को भी, चिकित्सा, भौतिक और रसायन तथा साहित्य और शांति के साथ जोड़ दिया गया।
- यू.एस.ए. ने १४ मई १९७३ को तीन खगोलियों के साथ स्काई लैब अंतरिक्ष केन्द्र के साथ भेजा। वे ८४ दिन अंतरिक्ष में रहे।
- सेमोर क्रे द्वारा १९७६ में एक विलक्षण कम्प्यूटर का निर्माण किया गया। जिसे क्रे-१ कहा जाता था। यह एक सेकेण्ड में २ करोड़ ४० लाख गिनती करने में समर्थ था।
- २० जुलाई १९७६ को यू.एस. का अंतरिक्ष यान विमिंग-१ मंगल ग्रह पर उतरा और वहाँ से चित्र भेजा।

पाकिस्तान के साथ दूसरा युद्ध

कांग्रेस के सांसदों ने २ जून को हुई एक बैठक में लाल बहादुर शास्त्री को स्वतंत्र भारत का दूसरा प्रधानमंत्री चुन लिया। उन्होंने ९ जून को कार्यालय सम्भाला।

लाल बहादुर शास्त्री

भारतीय कम्यूनिस्ट पार्टी पूर्ण रूप से ११ अप्रैल १९६४ को दो भागों में विभाजित हो गई। भारत-चीन युद्ध के चलते १९६२ में नेताओं के मध्य उठे विवाद से विभाजित हुआ। जिसमें एक तरफ रशिया सहयोगी और दूसरी ओर उनका दल जिन्होंने चीन का सहयोग किया। अगस्त में सात लोगों ने मिलकर एक अलग ब्लॉक लोकसभा में बनाया और भारतीय कम्यूनिस्ट पार्टी ने मजबूत विपक्ष का दर्जा खो दिया।

अप्रैल १९६४ में रिहा होने के तुरंत बाद कश्मीर के नेता शेख अब्दुल्ला ने जन मोर्चे को पुनः गठित किया और निर्णय लेने के लिए जनता के अधिकार की मांग की। मार्च १९६५ में वे मक्का की तीर्थ यात्रा पर गए, जहाँ उन्होंने इज़िप्ट के राष्ट्रपति नासेर तथा चीन के प्रधानमंत्री चाउ-एन-लै से मुलाकात की। उन दोनों ने शेख को आजाद कश्मीर के लिए शक्ति एकत्रित करने के लिए उत्साहित किया। भारत ने उसके पासपोर्ट को जब्त कर लिया। अप्रैल में जम्मू और कश्मीर को भारत में वीलीन कर लिया गया। भारतीय संविधान के अनुसार सदर-ई-रियासत को राज्यपाल और वजीर-ए-आज़म को मुख्यमंत्री के नामों में बदल दिया गया। तीर्थ यात्रा से आने के बाद शेख को पुनः गिरफ्तार कर लिया गया।

१९६५ में भारत और पाकिस्तान की दूसरी लड़ाई आरम्भ हुई। अप्रैल में पाकिस्तान ने भारतीय केन्द्रशासित राज्यों की लगभग २००० वर्ग की भूमि को चीन को दे दिया। पाकिस्तानी सेना गुजरात के कच्छ इलाके रान में प्रवेश कर गई। जून में पाकिस्तानी सैनिक भारतीय केन्द्रशासित राज्यों में लगभग ८ कि.मी. भीतर तक घुस आयी और भारतीय सैनिक छावनियों पर आक्रमण करने लगी। अगस्त में पता चला कि ७००० से भी अधिक उग्रवादी कश्मीर की आम जनता के साथ रह रहे हैं। पाकिस्तानी सेना ने भी भारतीय लक्ष्यों को भेदना आरम्भ कर दिया।

एक सितम्बर को भारतीय वायु सेना ने दुश्मनों के बीच तनाव पैदा कर दिया। ४ सितम्बर को पंजाब सीमा पर युद्ध आरम्भ हो गया और दुश्मनों की कतार को दो भागों में बाँट दिया। जो लाहौर तक बिछी हुई थी। ६ सितम्बर को राष्ट्रपति अयूब खान ने भारत के विरोध में पूर्ण रूप से युद्ध की घोषणा कर दी। भारतीय सेना ने काफी महत्वपूर्ण विजय हासिल की और दुश्मन के लगभग १०० पैटान टैंकों को ध्वस्त कर दिया।

११ सितम्बर को यू.एस. के महासचिव यू. थान्त भारत आए और युद्ध समाप्ति का प्रस्ताव रखा। दोनां देशों ने इस प्रस्ताव को ठुकरा दिया।

फिर भी राष्ट्र संघ की रक्षा परिषद द्वारा अपील किए जाने पर २३ सितम्बर को युद्ध बंद हो गया। पाकिस्तान ने भारतीय केन्द्र शासित प्रदेशों की ७१० वर्ग मील-भूमि को वापस दे दिया और भारत को २१ वर्ग मील छोड़ना पड़ा।

- ३१ जनवरी १९६३ को मोर को राष्ट्रीय पक्षी के रूप में उद्घोषित किया गया।
- १ दिसम्बर १९६३ को नागालैण्ड एक सम्पूर्ण राज्य के रूप में स्थापित हुआ।

- २२ मार्च १९६४ को प्रथम विन्टेज कार रैली कलकत्ता में आरम्भ हुई। जिसमें ५० मोटरों ने भाग लिया।
- पहली बार जवाहरलाल नेहरु के चित्र छपे सिक्के दिसम्बर १९६४ में बाजार में आए।

विश्व में और कहाँ.....

- २१ जुलाई १९६९ मानवता के लिए काफी प्रसन्नता का दिन था। यू.एस.ए. ने पहली बार आदमी को चांद पर उतारा। नील अर्मस्ट्रांग पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने अपना पाँव चांद पर रखा। १८ मिनटों के बाद खगोल शास्त्री एडविन आल्ड्रिन ने भी चांद पर पाँव रखा। दोनों ने मिलकर चाँद पर यू.एस.ए. का झण्डा फहराया। उन्होंने फोटो लेने, पत्थर के टुकड़े तथा धूल बटोरने में लगभग २ घंटे चाँद पर बिताए। सबके बाद जबकि ब्रह्माण्ड शास्त्री माईकल कोलिन्स, कोलम्बिया के मदरशिप में रह गए। लुनार माडल जिसे इगल कहा जाता था, वह दो और यंत्रों के साथ मदर शिप में लौट आया। और अपोलो-११ अंतरिक्ष यान २४ जुलाई को पृथ्वी पर लौट आया। आर्मस्ट्रांग के कहे अनुसार यह "एक छोटा कदम चन्द्रमा पर, आदमी के लिए एक उँची छलांग है"।
- २५ मार्च १९६९ में पाकिस्तान सैनिक प्रशान के अंतर्गत आ गया, जब जनरल याह्या खान ने सत्ता हासिल कर ली। राष्ट्रपति अयूब खान ने त्याग पत्र दे दिया।

भारत की महिला प्रधानमंत्री

अन्ततः शत्रुता का अंत हुआ और भारत तथा पाकिस्तान सोवियत संघ के बीच बचाव करने पर मित्रता के लिए आगे बढ़े। प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री और पाकिस्तान के राष्ट्रपति ने ताशकंद के उजबेकिस्तान में ४ जनवरी १९६६ में मुलाकात की और सात दिनों तक वार्तालाप करते रहे। १० जनवरी को उन्होंने एक मित्रता अनुबंध पर हस्ताक्षर किया और सदा शांति बनाए रखने का वादा भी। यह भी निर्णय लिया गया कि दोनों देश युद्धबंदियों को छोड़ देंगे। अपने संबंधों की स्थापना करेंगे, उच्च स्तरीय वार्तालाप के द्वारा लंबित पड़े मामले को निपटायेंगे, और एक दूसरे के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं करेंगे।

दुर्भाग्यवश लालबहादुर शास्त्री को दिल का दौर पड़ा और प्रातः काल उनका देहान्त हो गया। गुलजारी लाल नन्दा को एक बार फिर कार्यकारी प्रधानमंत्री बनाया, जैसे कि १९६४ में नेहरु की मृत्यु के बाद। कांग्रेस के अध्यक्ष के. कामराज ने भारत की तीसरी प्रधानमंत्री के रूप में इंदिरा गाँधी को चुना। २३ जनवरी १९६६ में उन्होंने शपथ ग्रहण की।

१ नवम्बर को पंजाब में दो अलग राज्य बने एक पंजाब और दूसरा हरियाणा जिनकी राजधानी चण्डीगढ़ बनाई गई।

चौथा सामान्य चुनाव फरवरी १९६७ में हुआ। कांग्रेस को २८३ सीटें मिली। इस चुनाव में स्वतंत्र पार्टी को ४४ जनसंघ ३८, सी.जी.आई. २३, सी.पी.एम. १९, पी.एस.पी. १३ तथा अन्य को ४५ और स्वतंत्र को ३५। कांग्रेस ने पंजाब, राजस्थान, बिहार, उड़ीसा, पश्चिम बंगाल, उत्तर प्रदेश, केरल तथा तमिलनाडु विधान सभा में अपना बहुमत खो दिया। जबकि दिल्ली में भी १२ मार्च को इंदिरा गांधी को पुनः प्रधानमंत्री चुना गया।

इंदिरा गाँधी

कुछ भूतपूर्व कांग्रेसी नेता जो पार्टी से इस्तीफा दे चुके थे, अथवा निकाले जा चुके थे, उन्होंने मई १९६७ में भारतीय क्रांति दल का निर्माण किया। इसमें बी.के. कृष्णा मेनन, डॉ. पी.सी. घोष, और जे.बी. कृपलानी भी शामिल थे। इस दल का उद्देश्य कांग्रेस में हो रहे भ्रष्टाचार, शक्ति के एक तरफा उपयोग के खिलाफ आवाज उठाना था और राजनीति में सदाचार लाना था।

डॉ. जाकिर हुसैन १३ मई १९६७ में तीसरे राष्ट्रपति बने। उसी समय पर पश्चिमी बंगाल में नक्सलवादियों ने एक संघ की स्थापना की। दार्जीलिंग जिले के ६० गाँव नक्सलवादी क्षेत्र के अंतर्गत आते थे, और उन्होंने कृषि भूमि के सुधार की मांग की और यह आन्दोलन उग्र हो गया। जो आगे चलकर

डॉ. जॉकिर हुसैन

राजनीतिक मुद्दा बन गया। नक्सलवादियों ने अपनी गतिविधियाँ शहरों, कस्बों में भी आरम्भ कर दी। यह तनाव आंध्रप्रदेश, केरल, बिहार, पंजाब तथा उत्तर प्रदेश में फैल गया।

- पोप पॉल-६ १९६४ में बम्बई पहुँचा। यह पहले पोप थे, जो भारत यात्रा पर आये।

जी. संकरा कुरूप

- मलयालम कवि जी. संकरा कुरूप प्रथम व्यक्ति थे, जिन्हें १९६५ में ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला।
- भारत के महान तैराक मिहिर सेन ने १९६६ में पाँच राज्यों को पार कर अप्रैल से अक्टूबर के बीच तैराकी का विश्व उच्चतम स्थापित किया। यह पहले व्यक्ति थे, जिसने पनामा नहर के ९६ कि.मी. की दूरी ३४ घंटे १५ मिनट में पूरी की।

विश्व में और कहाँ.....

- जनरल याहिया खान ने पाकिस्तान में सामान्य चुनावों की आज्ञा दी। पाकिस्तान पीपल्स पार्टी के नेता जुल्फिकार अली भुट्टो तथा आवामी लीग के नेता शेख मुजिबर रहमान थे। इसमें पहली पार्टी ने पश्चिमी पाकिस्तान में बहुमत प्राप्त किया, उसी पूर्व में दूसरी ने। पूर्वी पाकिस्तान में आवामी पार्टी ने आजादी की मांग की जिसके कारण दोनों में मतभेद उत्पन्न हो गया।
- सोवियत संघ का अंतरिक्ष यान सोयूज-९ १७ दिनों तक ९ खगोल शास्त्रियों को लेकर अंतरिक्ष में रहा। यह जून १९७० में हुआ।
- १४ नवम्बर १९७१ में नासा द्वारा मेरिनर-९ आरम्भ किया गया, जिसने पहली बार मंगल ग्रह के पथ की खोज की। इसने ८५ प्रतिशत ग्रहों और चित्रों से पृथ्वी पर भेजा। १५ दिनों बाद देखा गया कि सोवियत मार्स-२ मार्टियन वातावरण में पहुँच गया और परन्तु ग्रहों के धरातल पर धूल होने के कारण नाकाम रहा। परन्तु मार्स-३ ग्रह पर २ दिसम्बर को उतरा। उपग्रह, बंद होने से २. सेकेण्ड पहले तक सूचना देता रहा।

भारत बंगलादेश का सहायक

कांग्रेस पार्टी में उस समय फूट पड़ी और यह तुरंत विभाजित हो गई, जब मोरारजी देसाई से आर्थिक सत्ता छीन ली गई और इंदिरा गांधी ने स्वयं उसे अपने हाथ में ले लिया। इसी के चलते १६ जुलाई १९६९ मोरारजी देसाई ने अपने पद से त्याग पत्र दे दिया।

३ मई १९६९ को कार्यालय में ही डॉ. जॉकिर हुसैन का देहान्त हो जाने के कारण उप राष्ट्रपति वी.वी. गिरी को राष्ट्रपति चुन लिया गया। इस चुनाव में उनके विरोध में कांग्रेस के प्रत्याशी एन. संजीवा रेड्डी थे। जी.एस. पाठक ने अपने विरोधी जे. शिवशणमुगम को पराजित कर उपराष्ट्रपति का पद-भार सम्भाला

बी.बी. गिरी

पार्टी में उस समय फूट और अधिक पड़ गई जब पार्टी के अध्यक्ष पद का चुनाव हुआ। परिणामस्वरूप पार्टी दो भागों में विभाजित हो गई, जिसमें इंदिरा गांधी का समर्थन करने वाले नेता कांग्रेस (आर) के नाम से अलग हो गये। दूसरी पार्टी ने अपने को कांग्रेस (ओ) के नाम से अलग करके एस. निजालिंगप्पा को अपना अध्यक्ष बनाया।

भारत में पाँचवीं लोकसभा के चुनाव मार्च १९७१ में हुए। कांग्रेस (आर) ने इस चुनाव में ५१८ सीटों में से ३५० सीटें प्राप्त की। इंदिरा गांधी ने १८ मार्च को फिर से प्रधानमंत्री की कुर्सी सम्भाली।

देश में १९७१ के दिसम्बर माह में पाकिस्तान के साथ फिर एक युद्ध हुआ। पश्चिमी और पूर्वी पाकिस्तान के झगड़े ने एक नया मोड़ ले लिया। परिणामस्वरूप पूर्वी पाकिस्तान, जो आजादी की माँग कर रहा था, वहाँ बंगलादेश के शरणार्थियों के आने-जाने से वहाँ के राज्य की आर्थिक स्थिति पर कुप्रभाव पड़ने लगा और उसी प्रकार भारत पर भी। तभी पाकिस्तानी जहाजों द्वारा पश्चिमी बंगाल पर अचानक आक्रमण कर दिया गया। २३ नवम्बर को भारतीय वायु सेना ने पाकिस्तान के तीन जहाजों को मार गिराया। दूसरे दिन भारतीय सेना को आज्ञा दी गई कि वह पूर्वी पाकिस्तान जाकर मुक्ति वाहिनी के साथ उसे आजाद कराने में सहायता प्रदान करे। ३ दिसम्बर को पाकिस्तानी जहाजों ने भारतीय वायु सेना के ९ अड्डों पर हमला किया। भारत ने तुरन्त पाकिस्तान के साथ युद्ध घोषित कर दिया और संसद ने आपातकालीन स्थिति की घोंषणा कर दी। ६ सितम्बर को भारत ने बंगलादेश को एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में पहचान दे दी। ८ दिसम्बर को बंगलादेश में उपस्थित पाक-सेना को हथियार डालने के लिए कहा गया और जिसके करण कई जिले मिला लिए गए। उसी समय भारतीय सेना ने पश्चिमी सीमा को अपने कब्जे में कर लिया। १२ दिसम्बर को एक बार फिर पाकिस्तानी सेना को हथियार डालने के लिए कहा गया। तीन दिन बाद जनरल ए.के. नियाजी ने समझौता करने की घोषणा की और जनरल जे.एस. अरोरा ने बिना किसी शर्त के पाकिस्तानी सेना का समर्पण स्वीकार कर लिया। १७ दिसम्बर को भारत ने एक तरफा समझौता करने की घोषणा की जो राष्ट्रपति याहिया खान ने स्वीकार कर लिया।

२० जनवरी १९७२ को मेघालय और अरुणाचल प्रदेश पूर्ण रूप से राज्य घोषित किए गए। दूसरे दिन त्रिपुरा, मणिपुर, और केन्द्रशासित मिजोरम को भी राज्य बना दिया गया।

मार्च १९७२ में १६ राज्यों की विधान सभाओं के लिए चुनाव किए गए। कांग्रेस (आर)-ने १४ राज्यों और केन्द्रशासित दिल्ली में बहुमत हासिल किया। गोआ में महाराष्ट्रवादी गोमंतक पार्टी ने तथा मेघालय में सर्वदलीय नेता संघ ने काफी संख्या में मत हासिल किया। परन्तु मणिपुर में कोई भी पार्टी बहुमत हासिल न कर सकी।

३ जुलाई १९७२ को प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी और पाकिस्तानी प्रधानमंत्री अली भुट्टो ने एक अनुबंधन पर हस्ताक्षर किया जो शिमला समझौता कहलाया। बंगलादेश में पाकिस्तानी सेना के हथियार डालने की घटना ने भुट्टो को पाकिस्तान में सेना शक्ति हटाने के लिए उत्साहित किया। वे तब प्रधानमंत्री बने। जबकि शिमला समिति बंगलादेश की स्थापना की शाखा थी, परन्तु अभी भी वार्तालाप मुख्य रूप से कश्मीर समस्या पर ही केंद्रित था।

भुट्टो

५ अप्रैल १९७३ को सिक्किम पड़ोसी देश ने भारत से वहाँ पर कानून और व्यवस्था की रक्षा करने को अपील की। दूसरे दिन ही भारतीय सेना की एक टुकड़ी और रिजर्व पुलिस बल ने सिक्किम में प्रवेश किया। महाराजा और भारतीय सरकार ने वहाँ पर गणतंत्र की स्थापना की बात मान ली, जो राजनीतिक पार्टियों ने प्रस्तावित की थी।

२४ सितम्बर १९७४ को लोक सभा ने ३५वाँ अमेन्डमन्ड बिल पास किया, जिसमें सिक्किम को २६ अप्रैल १९७५ को भारत का २२वाँ राज्य घोषित किया गया।

भारत के कुछ मील के पत्थर

- १ मार्च १९६९ में हावरा-दिल्ली मार्ग पर १३० कि.मी. प्रति घंटे की रफ्तार से चलने वाली रेल 'राजधानी' आरम्भ हुई।
- भारत की चौथी पंच-वर्षीय योजना का आरम्भ दिसम्बर १९६९ किया गया।
- फिल्मकार दादा फाल्के के सौवें जन्मदिन पर सिनेमा में कार्य करने के लिए 'दादा साहेब फाल्के' पुरस्कार घोषित किया गया। यह पुरस्कार पहली बार देविका रानी रोयरिच को मिला।
- दिसम्बर १९६९ को गुजरात का गीर जंगल एशियाई शेरों का जंगल घोषित किया गया।
- बी.बी. गिरी का राष्ट्रपति पद के लिए चुनाव उच्चतम न्यायालय में हुआ जहाँ उन्हें चुन लिया गया। इस प्रकार भारत के राष्ट्रपति पहली बार २०-२१ अप्रैल १९७० को न्यायालय के समक्ष व्यक्तिगत रूप से प्रस्तुत हुए।
- विवेकानन्द स्मृति चिन्ह भवन कन्याकुमारी में स्थापित किया गया और उसका उद्घाटन राष्ट्रपति गिरी ने २ सितम्बर १९७० में की।
- अंतर्राष्ट्रीय न्यायाधीश न्यायालय के न्यायाधीश नागेन्द्र सिंह पहली बार भारतीय न्यायालय के अध्यक्ष बनें (१९७०)।

भारतीय राजनीति में मोड़-तोड़

आणविक योजना को अंजाम देने के लिए भारत ने एक साहसपूर्ण कदम उठाया। १८ मई १९७४ को राजस्थान के रेतीले स्थान पोखरण में इसका परीक्षण किया गया। यह विस्फोट पृथ्वी के १०७ मी. नीचे प्रातः ८ बजेरक १५ मिनट पर किया गया। इस प्रकार भारत ने विश्व शक्ति की गोपनीयता को भेदते हुए आणविक संघ में प्रवेश कर लिया। फिर भी यह कहा गया कि भारत का अणु बम परीक्षण भी शांति स्थापित करने के ध्येय से ही किया गया है।

फकरुद्दीन अली अहमद ने २४ अगस्त को भारत के पाँचवे राष्ट्रपति के रूप में शपथ ली। २७ अगस्त को बी.डी. जत्ती उपराष्ट्रपति बने।

कश्मीर में एक बार फिर शेख अब्दुल्ला २५ फरवरी १९७५ को मुख्यमंत्री बने। जिस अनुबंध के साथ उन्होंने केन्द्र में प्रवेश किया वह विधायकों द्वारा प्रमाणित किया गया था। जो अब भारत संघ के अतिरिक्त अन्य मामलों पर भी निर्णय ले सकता था। जून में शेख अब्दुल्ला ने जन मोर्चा को छोडकर राष्ट्रीय सम्मेलन में प्रवेश ले लिया।

फकरुद्दीन अली अहमद

१९६२ और १९६५ में जब भारत-पाकिस्तान युद्ध हुआ था, तो देश में आपातकालीन की घोषणा कर दी गई थी। इस समय तीसरी बार १९७५ में आपातकालीन लागू किया गया। १२ जून १९७१ में हुए इंदिरा गांधी के चुनावों को झूठ बताते हुए अलाहाबाद उच्च न्यायालय ने ६ वर्ष तक उन्हें किसी भी चुनाव में भाग लेने पर प्रतिबंधलगा दिया। १३ जून को लगभग सभी विपक्षी नेता राष्ट्रपति भवन के समक्ष प्रधानमंत्री के त्यागपत्र की मांग करते हुए प्रदर्शन करने लगे। २४ जून को उच्चतम न्यायालय ने अलाहाबाद उच्च न्यायालय के निर्णय पर रोक लगा दी। २५ जून को विपक्षी दलों ने कम्यूनिस्ट पार्टी के नेता जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में इंदिरा गांधी सरकार के विरोध में पूरे देश भर में विरोध प्रकट करने का निर्णय किया। रात को राष्ट्रपति फखरुद्दीन अली अहमद्र ने आपातकाल की घोषणा कर दी और कहा कि देश की शांति भंग करने के लिए यहाँ कुछ आंतरिक कार्य चल रहे थे। जयप्रकाश नारायण, मोरारजी देसाई, ए.वी. वाजपेयी, एल.के. आडवाणी, चरनसिंह तथा अशोक मेहता जैसे नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया। राष्ट्रीय सेवा संघ, आनन्द मार्ग तथा अन्य संघों पर प्रतिबंध लगा दिया गया। प्रेस पर भी पूरी तरह से प्रतिबंध लगा दिया गया। ७ नवम्बर को उच्चतम न्यायालय ने इंदिरा गांधी के राय-बरेली चुनाव की आज्ञा दे दी। आपातकाल १९७७ के आम चुनाव के कुछ दिनों पहले ही हटाया गया।

१९७६ में जब चार दलों ने मिलकर जनता पार्टी के निर्माण का निर्णय लिया तो संसद में एक और नए दल का आविर्भाव हुआ। अब संसद में कांग्रेस (ओ), जनसंघ, भारतीय लोक दल, और समाजवादी पार्टी थीं। १९७७ के चुनावों में जनता पार्टी ने कांग्रेस को पराजित कर भारतीय राजनीति में एक नया चिन्ह बनाया।

(आगामी अंक में : दुनिया के सबसे विशाल गणतंत्र की गतिविधियाँ।)

बहू, जो पसन्द आयी

करात गाँव में गोपू नामक एक किसान रहा करता था। वह अपनी खेती स्वयं करता था और आवश्यकता पड़ने पर दूसरे किसानों की मदद भी करता था। गाँव के लोगों में उसका अच्छा नाम था।

उसकी दो बेटियाँ थीं। बड़ी बेटी का विवाह हो गया और वह ससुराल भी चली गयी। दूसरी बेटी भी शादी के लायक उम्र की हो गयी। उसकी पत्नी जितना जल्दी हो सके, उतनी जल्दी छोटी बेटी का भी विवाह कराने के लिए हर रोज़ ज़िद करती रहती थी।

एक दिन गोपू शिव के मंदिर में भगवान शिव का अभिषेक करा रहा था। मंडप में ही बैठे एक दूसरे आदमी से वह कहने लगा, "हमारा शिव बड़ा ही महिमावान है। कहते हैं कि हमारे एक पूर्वज खेती में हलचला रहे थे, तब उन्हें यह शिवलिंग मिला। गाँव के सब लोगों को जब यह बात मालूम हो गयी, तब सबने मिलकर यह मंदिर बनाया। हर दिन खेत में जाने के पहले किसान यहाँ आते थे और प्रणाम करके, भगवान का आशीर्वाद पाकर काम पर जाते थे। तुम भी अभिषेक कराओ, तुम्हारी भी इच्छा वे पूरी करेंगे।"

अभिषेक का कार्यक्रम पूरा हो जाते ही पुजारी उसके पास आया और उन्हें भगवान का प्रसाद खाने को दिया। उस समय एक घोड़ा-गाड़ी मंदिर के सामने आकर रुकी, गाड़ीवाला एक आदमी से पूछ रहा था-"बता सकते हैं, गोपूजी का घर कहाँ है?"

तभी मंदिर से बाहर आये गोपू ने गाड़ीवाले का यह सवाल सुना। उसने उसके पास आकर कहा, "मैं ही गोपू हूँ। कहो, क्या बात है?"

तब एक व्यक्ति गाड़ी से उतरा। उसने कीमती कपड़े पहन रखे थे। गले में बसनखा

मुरलीधर

लटक रहा था। चार उँगलियों में अंगूठियाँ डाल रखी थीं, लगता था, बड़ा धनी हो।

गोपू को गौर से देखने के बाद उस व्यक्ति ने कहा, "अरे... गोपू..! तुमने मुझे पहचाना नहीं?"

'अरे' कहकर संबोधित करनेवाले उस धनी को आश्चर्य भरे नेत्रों से देखता हुआ गोपू एकदम चिल्ला पड़ा, "अरे, मुकुन्द, तुम...!"

'हाँ' के भाव में मुकुन्द मुस्कुराता रहा। यह मुकुन्द बहुत पहले यानी लगभग बीस सालों के पहले इसी गाँव में रहा करता था। घरजवाई बनकर गोपालपुर नामक गाँव चला गया। ससुरालवाले धनी थे, साथ ही उसने भी मेहनत करके बहुत धन कमाया। धनी होने के कारण आसपास के गाँवों में उसका आदर होता था।

बड़े ही प्यार से गोपू, मुकुन्द को अपने घर ले गया। पत्नी और पुत्रों से उसका परिचय कराया। उसका अच्छा आतिथ्य-सत्कार किया और कहा, "बीस साल हो गये, फिर भी बिना भूले मेरे घर आये हो। ऐसा लगता है मानों कुचेल के घर श्रीकृष्ण भगवान पधारे हों। गाँव में मेरा थोड़ा-बहुत अच्छा नाम है। मुझसे कोई मदद हो सके तो अवश्य करूँगा।"

मुकुन्द ने हंसते हुए कहा, "गोपू, मेरी बातें ध्यान से सुनो। मेरे दो बेटे हैं। कोई बेटी नहीं है। मेरे दोनों बेटे भी खेती कर रहे हैं। खेती-वाड़ी हमारी छठवीं जान है। नौकर-चाकर कितने भी हों, खेती के काम तो खुद संभालते हैं। मेरी पत्नी भी घर पर ही रहकर घर का काम संभालती है, पशुओं की देखभाल भी करती है। भगवान की दया से पहली बहू ऐसे ही स्वभाव की मिल गयी। दूसरी बहू को देखने के लिए ही पास के गाँव बसन्तपुर जाने निकला। पर मुझे लगता है कि अब वहाँ जाने की आवश्यकता नहीं है। तुम्हारे घर आने के बाद मुझे लगता है कि तुम्हारी दूसरी बेटी वाणी मेरी दूसरी बहू बने तो अच्छा होगा। यह रिश्ता मेरे बेटे को और मेरी पत्नी को भी पसंद आयेगा। मैं ये प्रस्ताव तुम्हारे सामने रख रहा हूँ। आगे तुम्हारी इच्छा।"

गोपू की खुशी का ठिकाना न रहा। उसे लगा, जानों वह कोई सपना देख रहा हो। कहने लगा, "इससे बड़ा भाग्य मेरे लिए और क्या हो सकता है! मेरी बेटी एक संपन्न परिवार में बहू बनकर जायेगी, इससे बढ़कर मुझे और क्या चाहिए ? तुम जितना माँगोगे, उतना शायद दे नहीं पाऊँगा, पर थोड़ा-बहुत दहेज ज़रूर दूँगा।"

मुकुन्द ने गोपू की पीठ को थपथपाते हुए कहा, "गोपू, तुमसे क्या छिपा है। मैं भी मामूली किसान ही था। घरजवाई बनकर संपन्न ससुराल में गया। परंतु उन लोगों ने अच्छी तरह से मेरी देखभाल की। मुझे अपने परिवार का सदस्य माना। अपने व्यवहार में या अपनी बातों में कभी भी कडुवापन मुझे महसूस होने नहीं दिया। हम भी दहेज लेकर क्या करेंगे ? हमारे ही पास काफी धन व संपत्ति है। हमारे किसान परिवार में वह घुल-मिल जाए, हममें से एक हो जाय, यही हमें चाहिए।"

निकलने के पहले यह निश्चय हुआ कि मुकुन्द का बेटा व उसकी पत्नी जल्दी ही बहू को देखने आयेंगे और फिर मुहूर्त की तारीख़ निश्चित होगी। मुकुन्द को भेजने गोपू जब उसके साथ बाहर आया, तब पिछवाड़े से दौड़ती हुई वाणी आयी और बोली, "थोड़ी ही देर में शायद बड़ी बारिश होगी। थोड़ा रुककर जायें तो अच्छा होगा।"

मुकुन्द ने आकाश को देखते हुए कहा, "यह क्या कह रही हो ? यहाँ कड़ी धूप है और तुम कह रही हो, बारिश होनेवाली है!"

वाणी, अपने पिता और मुकुन्द को पिछवाड़े में ले गयी। उनसे कहने लगी, "यह देखिये, चींटियाँ सफ़ेद अण्डे पकड़े क़तार में बाहर आ रही हैं। मुर्गी पंख फैलाकर उन्हें सुखा रही है। मक्खियाँ तितर-बितर होकर उड़ रही हैं। ये सब संकेत देता है कि जल्दी ही बारिश होनेवाली है।"

मुकुन्द ने तुरंत कहा, "वाह ! वाह !! तुम तो मेरे घर की बहू बनने के लायक़ हो। तुम्हारी सास को तुम बहुत पसन्द आओगी।"

थोड़ी ही देर में ज़ोर की बारिश होने लगी और यों वाणी की भविष्य वाणी सच निकली।

घर लौटने के बाद मुकुन्द ने अपनी पत्नी को सब बातें बतायीं। उसकी पत्नी और उसका बेटा वाणी को देखने आये। दोनों को वह बहुत अच्छी लगी। उन्होंने आपस में निर्णय कर लया कि वाणी ही उनकी बहू बनेगी।

मुकुन्द की पत्नी ने वाणी से पूछा, "मामा के साथ बड़ा और छोटा मिल जाए तो लाभ होगा या अंधा और कुबड़ा मिल जाएँ तो लाभ होगा। तुम इसका सही जवाब दे पायीं तो अवश्य ही मेरी बहू बनने के लायक साबित होगी।"

वाणी ने तुरंत जवाब दिया, "अगर विश्वास किया जाय कि इससे गोपाल को ही लाभ पहुँचेगा, तो मामा के साथ जो भी रहे, उसे लाभ पहुँचेगा।"

मुकुन्द वाणी के जवाब को सुनकर फूला न समाया और उसने अपने बेटे से कहा, "बेटे...! वह वाणी मुझे बहुत पसन्द आयी। वह तुम्हारी योग्य पत्नी बनेगी।"

तब मुकुन्द के दूसरे बेटे ने वाणी को समझाया, "नवग्रहों में बड़ा है - सूर्य। छोटा है - बुध ग्रह। अंधे से मतलब है - शुक्र ग्रह। कुबड़े से मतलब है - शनि ग्रह। मामा हैं - चंदा मामा। जब सूर्य, बुध, शुक्र व शनि चंदा मामा से मिलते हैं, तब बारिश होती है। हमारी ग्रह स्थिति अच्छी हो तो ऐसा होता है। तब खेत के लिए आवश्यक बारिश होती है। ग्रह गुरु का विश्वास करके ही किसान खेती करते हैं। तुमने सही जवाब दिया और इसीलिए मैंने तुम्हारी प्रशंसा की।"

वाणी ने मुस्कुराते हुए टिप्पणी की, "ये अनुभव पर आधारित सूक्तियाँ हैं। इन्हीं पर निर्भर रहना भी सही पद्धति नहीं है।"

मुकुन्द की पत्नी उसकी इस टिप्पणी पर और खुश हुई, क्योंकि उसकी बातों में सचाई कूटकूटकर भरी हुई थी।

इसके कुछ दिनों बाद उनका विवाह संपन्न हुआ। मुकुन्द ने जाते हुए गोपू से कहा, "योग्य बहू को अपने घर ले जा रहा हूँ। मेरा घर इसके प्रवेश से और फलेगा-फूलेगा।"

६२. अश्वमेध यज्ञ

महाभारत

युधिष्ठिर के राज्याभिषेक के बाद श्रीकृष्ण बहुत समय तक हस्तिनापुर में उनके अतिथि बनकर रहे। तब उन्हें अपने पिता वसुदेव को देखने की इच्छा हुई। इस पर वे सात्यकी तथा सुभद्रा को साथ ले द्वारका को लौट आये।

वसुदेव ने कृष्ण के द्वारा युद्ध के सारे समाचार जान लिये और अपने नाती अभिमन्यु की मृत्यु पर अपना दुःख प्रकट किया।

इस बीच युधिष्ठिर ने अश्वमेध के लिए आवश्यक धन को हिमालय से लाने का संकल्प किया। पाँडवों ने सेनाओं को इकट्ठा किया। तब पांडव धृतराष्ट्र, कुंती तथा गाँधारी से अनुमति लेकर हिमालय की ओर चल पड़े। वे नदी, जंगल और पर्वतों को पार कर हिमालय में पहुँचे। उस जगह पड़ाव डाला जहाँ पर मरुत्त ने अपना धन छोड़ रखा था। वे एक रात भर उपवास और जागरण करते बाध की चटाइयों पर बैठे रहे, दूसरे दिन शिवजी, कुबेर तथा मणिभद्र की अर्चनाएँ कीं, भूतों के लिए बलियाँ देकर निधि को खोज निकला। उसमें अनेक प्रकार के सोने से निर्मित लोटे, थालियाँ, कलश, ढक्कन और थाल भी थे। सब सोने के बने थे। उन्हें ले जाने के लिए असंख्य ऊँट, घोड़े, वाहन और मनुष्यों की ज़रूरत पड़ी। आखिर सारा धन लेकर पांडव लोग हस्तिनापुर की ओर लौटे।

अश्वमेध यज्ञ की तैयारियों का समाचार जानकर कृष्ण, प्रद्युम्न, सात्यकी इत्यादि को साथ ले हस्तिनापुर को चल पड़े। उनके साथ सांब, चारुधेष्ण, गद, कृतवर्मा, सुभद्रा और बलराम भी चल पड़े। धृतराष्ट्र ने विदुर के साथ आगे बढ़कर उनका स्वागत किया। इस बार कृष्ण युयुत्सु के घर ठहर गये।

उसी समय उत्तरा ने एक शिशु को जन्म दिया। मगर वह शिशु रोया नहीं, शव जैसा पड़ा हुआ था। सभी लोग उदास हो गए। कुंती ने कृष्ण को बुलाने की बात सोची और तभी सात्यकी के साथ कृष्ण ही वहाँ पर आ पहुँचे। कृष्ण को देखते ही वहाँ पर उपस्थित सुभद्रा, द्रौपदी वगैरह नारियाँ रोने लगीं।

कुंती देवी कृष्ण को देख रुंधे कंठ में बोली-"हे कृष्ण, अब तुम्हें इस शिशु को बचाना होगा। अश्वत्थामा ने जिस अस्त्र का प्रयोग किया था, उसके कारण तुम्हारे भानजे का लड़का मृत पैदा हो गया है, इसको बचाने की कृपा करो।"

इसी प्रकार सुभद्रा, उत्तरा और द्रौपदी ने भी कृष्ण से अनेक प्रकार से निवेदन किया। उत्तरा यह समाचार सुनते ही बेहोश हो गई।

कृष्ण ने अपने कमल चरणों से मृत शिशु के शरीर का स्पर्श किया। तब उस शिशु में चेतना आ गई। तुरंत सब प्रसन्न हो उठे। ब्राह्मणों ने शिशु को आशीर्वाद दिया। पांडव वंश के परिक्षीण होने से वह शिशु ज़िंदा हो गया, इसलिए उसका नामकरण कृष्ण ने परीक्षित रखा। वे शिशु दिन-प्रति दिन बढ़ता गया।

परीक्षित एक महीने का हो गया। तब तक पांडव हिमालय से धन के साथ हस्तिनापुर लौट आये। उनके आगमन का समाचार मिलते ही हस्तिनापुर को सुंदर ढंग से सजाया गया। यादव सब पांडवों का स्वागत करने चल पड़े। सर्वत्र नृत्य-गान होने लगे। इस कोलाहल के बीच पांडवों ने हस्तिनापुर में प्रवेश किया। जब उन लोगों ने सुना कि उनका एक पोता हो गया है और मृत पैदा हुए उस शिशु को कृष्ण ने बचाया है, तब वे बहुत प्रसन्न हुए। सब ने मुक्त कंठ से कृष्ण का अभिनंदन किया।

इसके उपरांत युधिष्ठिर ने व्यास और कृष्ण की अनुमति पाकर अश्वमेध यज्ञ करने का उपक्रम किया। चैत्र पूर्णिमा के दिन युधिष्ठिर ने यज्ञ की दीक्षा ली। यज्ञ के अश्व का चुनाव

सूत और ब्राह्मणों को मिलकर करना था। तब उसे सभी देशों में भेजना था और उसे सारे संसार में घूम कर लौटना था। यही यज्ञ का विधान था।

अश्वमेध यज्ञ के समय युधिष्ठिर दीक्षा में होंगे, इस कारण यह निर्णय हुआ कि भीम नकुल की सहायता से राज-काज देखेंगे, अर्जुन के द्वारा यज्ञाश्व के पीछे चलकर उसकी रक्षा करने तथा पारिवारिक उत्तरदायित्व का भार संभालने के लिए सहदेव नियुक्त हुए।

अश्व रक्षक के रूप में जाने वाले अर्जुन से युधिष्ठिर ने कहा-"हे अर्जुन, यज्ञाश्व के पीछे चलते उसकी रक्षा करते जाते समय यदि कोई क्षत्रिय तुम्हारा सामना करेगा तो तुम उनके साथ शत्रुता मत पैदा करना, बल्कि उन्हें भी यज्ञ में भाग लेने के लिए निमंत्रण देना।"

युधिष्ठिर ने यज्ञ की दीक्षा लेकर यज्ञ के अश्व को स्वयं छोड़ दिया, उसके पीछे गांडीव धारण कर अर्जुन चल पड़े। तब नगर के सारे नागरिक एकत्रित हो बहुत ही प्रसन्न हुए। अर्जुन के साथ अश्वपोषण जाननेवाला यज्ञवल्क्य के एक शिष्य, वेदों के ज्ञाता कतिपय ब्राह्मण, तथा कुछ क्षत्रिय भी चल पड़े। युद्ध में पांडवों ने जो भूमि जीत ली थी, उस में अश्व ने पूरा संचार किया।

यों तो युधिष्ठिर ने बताया था कि किसी के साथ युद्ध न करो, फिर भी अर्जुन को अपने मार्ग में अनेक लोगों के साथ युद्ध करना पड़ा। कई जगह किरात तथा यवनों ने उनका सामना किया। अनेक आर्य क्षत्रियों ने भी अर्जुन का सामना किया, फिर भी सभी युद्धों में अर्जुन ही बिजयी हुए।

इसके बाद सैंधवों के साथ अर्जुन ने युद्ध किया। अर्जुन ने सभी सैंधवों को हराया। महाभारत युद्ध में अर्जुन के हाथ सैंधव मर गया था। उसकी पत्नी दुश्शाला धृतराष्ट्र की पुत्री थी। दुश्शला का पुत्र सुरथ, अर्जुन को अश्वमेध यज्ञ के अश्व के साथ आने का समाचार सुनकर अपने प्राण त्याग बैठा।

इस पर दुश्शला अपने पोते को एक रथ में बिठा कर अर्जुन के पास ले आई और बोली-''यह भी तुम्हारे पोते परीक्षित जैसा है। इसको देखते हुए तुम इन सारे सैंधवों को क्षमा करो। इसके दादा ने तुम्हारे साथ बड़ा द्रोह किया है, इस बात का हमें अत्यंत दुख है, इसलिए उस बात को तुम भूल जाओ।''

ये बातें सुन अर्जुन ने अपनी बहन दुश्शला के साथ आलिंगन किया और उसे तथा उसके पोते को घर भिजवा कर वह अपने घोड़े के साथ आगे बढ़े।

कई दिन बाद यज्ञ का घोड़ा मणिपुर में पहुँचा। उस वक्त बभ्रुवाहन मणिपुर पर शासन करता था। वह अर्जुन तथा चित्रांगदा का पुत्र था। जब उसने सुना कि उसका पिता उसके देश में आया हुआ है, तब वह कुछ ब्राह्मणों को साथ ले अर्जुन को देखने आया।

अर्जुन को अपने पुत्र का यह व्यवहार देख बड़ा क्रोध आया। वह बोला-''क्या तुम क्षत्रिय नहीं हो? मैं यहाँ अतिथि बनकर नहीं आया हूँ। अस्त्र धारण कर यज्ञाश्व की रक्षा करने आया हूँ। यदि तुम वीर हो तो अश्व को पकड़कर मेरे साथ युद्ध करो, ऐसा न होकर क्या तुम मीठी

महाभारत युद्ध में त्रिगर्तकों को अर्जुन ने मार डाला था, इसलिए अर्जुन को यज्ञाश्व के पीछे आने का समाचार जानकर त्रिगर्तों के पुत्र तथा पोते यज्ञ के अश्व को पकड़ने आये। अर्जुन ने इनके साथ स्नेह पूर्वक बातें करनी चाहीं, पर उन लोगों ने अर्जुन पर बाणों की वर्षा की। इस पर अर्जुन को त्रिगर्तों के नेता सूर्यवर्मा के साथ युद्ध करना पड़ा। तब अर्जुन ने सूर्यवर्मा, केतु धर्म, धृतवर्मा तथा अन्य अट्ठारह त्रिगर्त योद्धाओं को मार डाला, तब जाकर बाक़ी लोग अर्जुन के अधीन हो गये।

इसी प्रकार प्राग्ज्योतिषपुर में भगदत्त के पुत्र वज्रदत्त ने अर्जुन के साथ युद्ध किया। अर्जुन ने उसे पराजित किया, किंतु उसका वध किये बिना उसको मुक्त करते हुए अश्वमेध यज्ञ में भाग लेने का उसे निमंत्रण दिया।

बातें करने आये हो? क्या तुम्हें लज्जा नहीं होती?''

उस वक्त उलूची वहाँ पर आई और अपने पुत्र बभ्रुवाहन से बोली-''बेटा, मैं एक नागवंश की नारी हूँ। तुम्हारी माता हूँ। तुम्हारे पिता युद्ध के मद में हैं। तुम युद्ध करके उन को प्रसन्न करो।''

इस पर बभ्रुवाहन का पौरुष जाग उठा। युद्ध की पोशाक पहनकर रथ पर सवार हो अर्जुन के साथ युद्ध करने आया। दोनों के बीच भयंकर युद्ध हुआ उस युद्ध में दोनों बेहोश हो गये। चित्रांगदा ने आकर देखा कि उसका पति व पुत्र दोनों बेहोश हो गिर पड़े हैं। इसलिए वह रोने लगी। पर थोड़ी देर बाद बभ्रुवाहन होश में आया, अर्जुन के लिए रोनेवाली अपनी माता को देख उसने अपनी करनी पर पश्चाताप प्रकट किया और अनशन व्रत किया।

उस वक्त उलूची ने उसके निकट पहुँचकर कहा-''पगले, क्या तुम यह सोचते हो कि तुम्हारे पिता तुम्हारे हाथों मारे गये हैं ? उनको कोई जीत नहीं सकता। मैंने अपनी माया के द्वारा तुम्हारे मन में ऐसा भ्रम पैदा किया है। इस मणि को ले जाकर उनका स्पर्श करा दो, वे तुरंत उठ खड़े हो जायेंगे।'' तब बभ्रुवाहन ने ऐसा ही किया, अर्जुन मणि के स्पर्श के होते ही इस तरह उठ बैठा, मानो वह नींद से जाग उठा हो।

अर्जुन ने बभ्रुवाहन के साथ आलिंगन किया और वहीं पर उलूची तथा चित्रांगदा को

देख वह बहुत प्रसन्न हुआ। उसने उन दोनों से पूछा-''तुम दोनों युद्ध क्षेत्र में क्यों आ गई ?''

इसके उत्तर में उलूची ने कहा-''अर्जुन, आपने भीष्म को अन्यायपूर्वक मार डाला जिससे आप पाप के भागी हो गये हैं। उसका परिहार करने के निमित्त मैंने आप को आपके पुत्र के हाथों में मरवा डाला।''

ये बातें सुन अर्जुन बहुत प्रसन्न हुए, उसने बभ्रुवाहन को अश्वमेध यज्ञ में भाग लेने का निमंत्रण दिया। बभ्रुवाहन ने अर्जुन से निवेदन किया कि वे एक रात को उसके घर अतिथि बन कर रहे, परंतु अर्जुन ने यह कहकर अस्वीकार किया कि उसे अपने घोड़े के साथ घूमना अनिवार्य है। अतः संभव नहीं है।

यज्ञ का घोड़ा समुद्र तट तक गया और वहाँ से लौट कर इंद्रप्रस्थ क़ो आने लगा। वह

अनेक देश घूमते आखिर मगध की राजधानी राजगृह में पहुँचा। वहाँ का राजा मेघसंधि अर्जुन के साथ युद्ध करके हार गया।

अर्जुन ने उसके युद्ध-कौशल पर प्रसन्न होकर कहा-"तुम छोटे हो, फिर भी तुमने बहुत ही अच्छे ढंग से युद्ध किया है। तुम्हारा वध करना मुझे पसंद नहीं है। अगली चैत्र पूर्णिमा को मेरे अग्रज युधिष्ठिर अश्वमेध यज्ञ करने वाले हैं। तुमको उसमें अवश्य भाग लेना होगा।"

इस प्रकार अर्जुन ने घोड़े के पीछे चलते म्लेच्छ, निषाध, शकुनि के पुत्र, गांधार राजा, द्राविड़, आन्ध्र तथा ओढ्र राजाओं के साथ युद्ध किया, विजयी हो हस्तिनापुर को लौट आये। तब तक चैत्र पूर्णिमा निकट आने वाली थी। एक महीना पूर्व से ही यज्ञ के सारे प्रयत्न प्रारंभ हुए।

यज्ञ के समय असंख्य लोग आये। उनमें अनेक वेदविद तथा राजा भी थे। कृष्ण और बलराम अपने साथ सात्यकी, प्रद्युम्न, सांब, गदा, कृतवर्मा तथा अनेक यादव प्रमुखों को साथ ले आ पहुँचे। चित्रांगदा तथा उलूची को साथ लेकर बभ्रुवाहन भी यज्ञ में भाग लेने आया।

अश्वमेध यज्ञ नियत समय पर बड़े वैभव के साथ संपन्न हुआ। युधिष्ठिर ने यज्ञ में आये हुए सभी लोगों में दान बाँटे। सब ने यज्ञ की प्रशंसा की। युधिष्ठिर के दानों की मुक्त कंठ से प्रस्तुति की। उसी समय वहाँ पर एक नेवला आया और बोला-"आप लोग इस यज्ञ की प्रशंसा करके थकते नहीं, परंतु मधुकरी करते कुरुक्षेत्र में निवास करनेवाले एक मुनि ने सत्तू का जो दान किया, वह इससे कहीं महत्वपूर्ण है।"

नेवले की बातें सुन सब लोग आश्चर्य में आये और उससे पूछा-"तुम कौन हो? कहाँ से आये हो? शास्त्र-विधि से यह यज्ञ जो संपन्न हुआ, इसमें कौन सी त्रुटि है? तुम सच सच बताओ?"

(क्रमशः)

बेटे की जिम्मेदारी

देवसेन श्रीधरपुर का शासक था। लोग कहा करते थे कि वे बहुत ही धर्मनिष्ठ और मंजे हुए राजनीतिज्ञ हैं।

विनीतसेन उनका बेटा था। वह क्षत्रियोचित विद्याओं में प्रवीण था। स्वयं बुद्धिमान था और विवेकी भी। इसलिए देवसेन ने शीघ्र ही उसे राज्य-भार सौंपने का निश्चय किया। फिर भी उन्होने उसकी शासन पद्धति और व्यवहार शैली को परखना चाहा।

देवसेन एक दिन अपने बेटे को अपने साथ दरबार में ले गये। सिंहासन पर आसीन होते ही मंत्री ने राजा से कहा, "महाराज, आपके दर्शनार्थ एक माँ और उसका बेटा आये हुए हैं।"

राजा ने उन्हे दरबार में ले आने की अनुमति दी। माँ सीता और उसका बेटा गोविंद दरबार में लाये गये।

"आप मुझसे क्या कहना चाहते हैं? आपकी समस्या क्या है?" राजा ने उनसे पूछा। गोविंद ने कहा " प्रभु, हम ग़रीब हैं। मेहनत की कमाई पर ही हमारा पेट भरता है। मैं तीन बच्चों का बाप हूँ। मैं और मेरी पत्नी यथासंभव परिश्रम करते हैं फिर भी अपने परिवार को संभाल नहीं पा रहे हैं। हमारी ज़रूरतें पूरी नहीं हो रही हैं। जीना दूभर लगता है। एसी दुर्स्थिति में इस बूढ़ी की देखबाल करना मेरे लिए मुमकिन नहीं हो पा रहा है। उसपर भी यह सदा बीमार रहती है। जब देखो तब कहती रहती है कि पेट में दर्द हो रहा है, सिर दर्द से मरी जा रही हूँ। मैं भला अपनी इस बीमार माँ का इलाज कैसे करा सकूंगा। इसीलिए इससे कहा करता हूँ कि वृद्धाश्रम में शामिल हो जाओ। पर यह बूढ़ी वहाँ रहने से इनकार कर रही है। आप कृपया इसे समझाइये। यही उम्मीद लेकर आपके पास आया हूँ सरकार!"

माँ सीता कहने लगी " महाराज, आप एक माँ का दर्द समझते हैं। शरीर में जब तक बल था ताकत थी, तब तक काम करती रही। अब मैं बूढ़ी हो गयी हूँ। मेरे शरीर में बल नहीं रहा। किसी

माधवी

काम को करने की हालत में नहीं हूँ। बेटे, बहू और पोतों के होते हुए भी मैं अनाथ हो गयी। ये वृद्धाश्राम में शामिल होने के लिए मुझपर ज़ोर डाल रहे हैं। इससे मेरे प्राण छटपटाने लगते हैं। आप ही बताइये, मैं क्या करूँ?" आँसू बहाती हुई बूढ़ी माँ ने राजा से पूछा।

देवसेन ने दोनों की बात ध्यान से सुनी। बग़ल में ही बैठा बेटा भी सुन रहा था और इसी घटना को लेकर सोच रहा था। वह एकटक गोविंद को और उसकी माँ को देखता जा रहा था।

राजा ने बेटे विनीतसेन के कानों में धीरे से कहा " विनीत इस झगड़े का निपटारा कैसे हो, मेरी समझ में नहीं आ रहा है। तुम्ही सोचो और इस समस्या को सुलझाओ!"

विनीतसेन ने कहा " समझ में न आनेवाली बात क्या है इसमें! गोविंद ने जो कहा, वह भी सच है। अपनी वर्तमान आर्थिक स्थिति को लेकर वह परेशान है। अपने को लाचार महसूस कर रहा है।" फिर उसने गोबिंद की ओर मुड़कर कहा, "थोड़ा-बहुत पढ़े-लिखे लगते हो। क्या किसी ग्रंथ में लिखा हुआ है कि मरते दम तक माता-पिता का पालन-पोषण करना बेटे का फ़र्ज़ है?"

" नहीं प्रभु, नहीं, ऐसा कहीं लिखा हुआ नहीं है। गोविंद ने दृढ़तापूर्वक कहा। फिर कहने लगा, "हम तरह-तरह के जंतुओं और पक्षियों को देखते आ रहे हैं। जब तक उनके पंख निकल नहीं आते तब तक ही वे उनका पालन-पोषण करते हैं। उनके उड़ जाते ही अपनी देखभाल
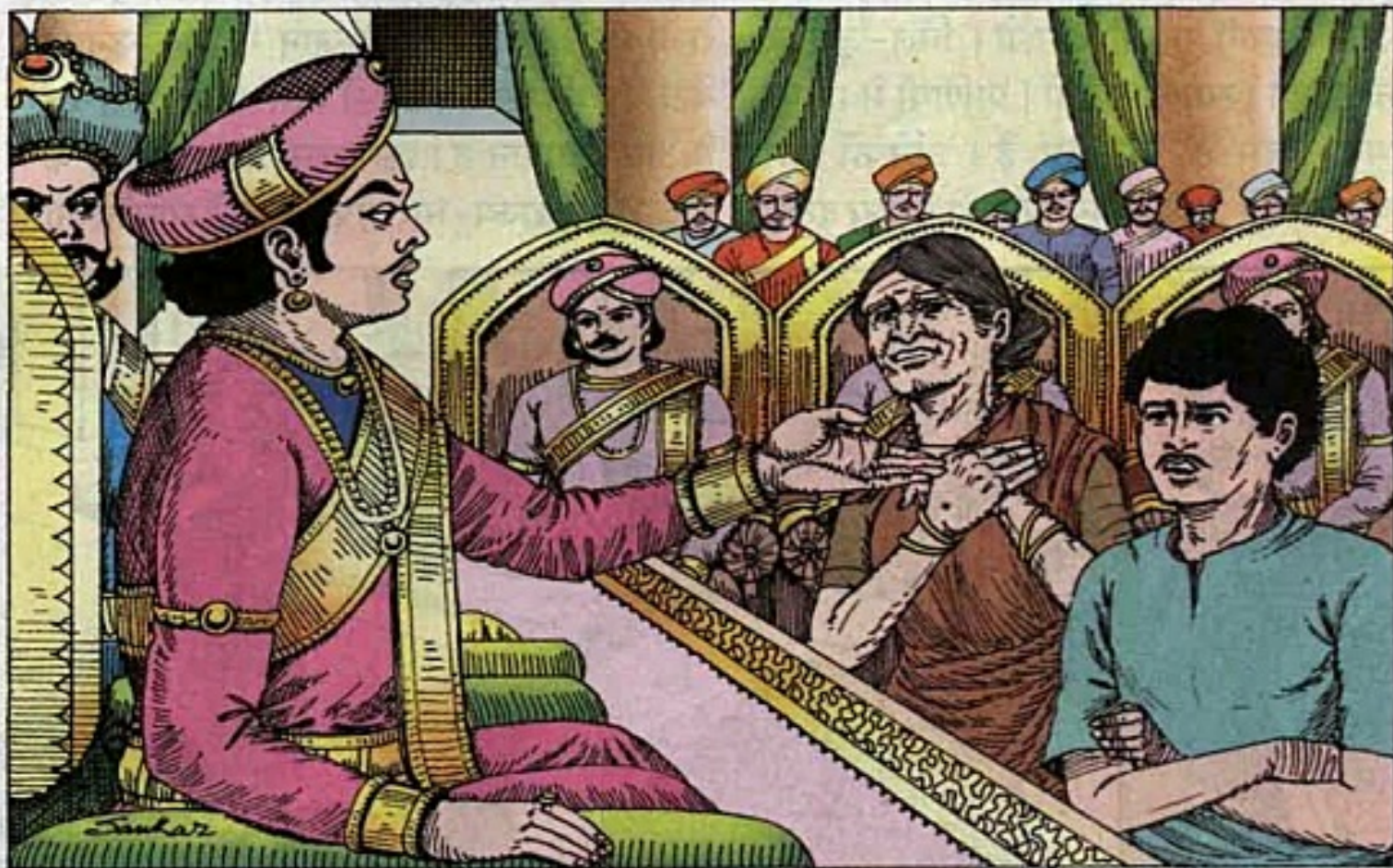
आप कर लेते हैं। वे अपनी संतान से यह तो नहीं कहते कि अब तक तुम्हारी देखभाल हमने की, इसलिए हमारी देखभाल करने की जिम्मेदारी तुम पर है।, यह तुम्हारा फर्ज़ बनता है।"

" तुमने जो कहा, सच है। पर गोविंद मेरा एक संदेह है " विनीतसेन ने कहा। गोविंद को लगा कि विनीतसेन इस विषय में उसी का समर्थन कर रहे हैं तो उसने उत्साह भरे स्वर में कहा, "पूछिये, राजन्!"

तब विनीतसेन ने उससे पूछा " तुम मनुष्य हो या पशु-पक्षी? अच्छी तरह सोच-विचारकर जवाब देना!"

गोविंद घबराता हुआ बोला " मनुष्य ही हूँ प्रभु!"

" अगर सचमुच ही तुम अपने को मनुष्य मानते हो तो अपनी माँ को सादर अपने घर ले जाओ। अपनी ग़लती समझो। मिल-जुलकर रहना सीखो। स्वार्थी न बनो! प्राणियों में मनुष्य जीवन उत्तम है, सर्वश्रेष्ठ है। अनेकों बार प्रत्युपकार की आशा किये बिना ही मनुष्य दूसरों की सहायता करता है, उनके कष्टों को बाँटता है। तुम्हारी माँ तुम्हारे लिए कोई परायी नहीं है। इसने तुम्हें जन्म दिया है। तुम्हारे लिए अनेकों कष्ट सहे। तुम्हें पाल-पोसकर बड़ा किया। ऐसी पवित्र जननी को ठुकराना पाप है। इस पाप से बचो। अब क्या सच है, समझ में आया? अपना कर्तव्य जान गये?" विनीतसेन ने पूछा।

विनीतसेन की बातों को सुनकर गोविंद को लगा मानों उसका सिर चकरा रहा हो। अपनी ग़लती पर पछताते हुए उसने कहा, "माँ इस पापी को क्षमा कर दो।" कहता हुआ वह माँ के पैरों पर गिर पड़ा।

माँ ने पहले अपने बेटे को और फिर विनीतसेन को यह कहते हुए आशीर्वाद दिया कि " सौ-सौ साल जीओ।"

अपने बेटे विनीतसेन के निर्णय को सुनकर राजा बहुत खुश हुए। वे जान गये कि उनका बेटा धर्म की सूक्ष्मताओं से भली-भांति परिचित है और प्रज्ञावान है। इस घटना के चंद दिनों के बाद उन्होंने राज्य-भार अपने बेटे को सौंप दिया।

चंदामामा प्रस्तुति
अजेय गरूड़ा
चित्र : पाणि
चन्द्रपुरी राज्य बहुत समय तक शांति और प्रसन्नता से चलता रहा। योग्य मंत्री की आकस्मिक मृत्यु के बाद राजा महेन्द्रदेव ने मंत्री के पुत्र आदित्य को दरबारी नियुक्त किया। लोगों को दुःखी कर रहे डाकुओं को सेनापति नरेन्द्रदेव पकड़ने में असफल रहे। तब यह कार्य राजा ने आदित्य को दे दिया। आदित्य ने उन्हे एक ही बार में पकड लिया। कारागार की ओर ले जाते हुए उसने एक डाकू को पहचान लिया जिसे राम सिंह कहते थे।

आदित्य अपने कक्ष में बैठा सोचने लगा। राम सिंह के शब्द उसके मस्तिष्क में गूंजने लगे।
क्या मैंने कभी लोगों को धोखा दिया? ऐसा क्या है जिससे उसने यह कह दिया?
एक अंगरक्षक भीतर प्रवेश करता है।
श्रीमान, एक महिला आपसे मिलना चाहती हैं।
उन्हें भीतर भेज दो!

मैं अरुणा हूँ!
आदित्य उस युवती के भीतर प्रवेश करते ही उठकर खड़ा हो गया।

अरुणा?
कृपया बैठिए!
आदित्य ने एक आसन की ओर संकेत किया।

तुम जानती होंगी कि मैं कुछ वर्षों के लिए एक आश्रम में रह रहा था। मेरे पिता की मृत्यु के बाद मुझे वापस बुलाया गया।
अच्छा, ऐसा क्या?
हाँ, मैंने यह सुना। हो सकता है तुम्हें न मालूम हो कि मेरे पिता का भी देहान्त उसी रात को हुआ। तुम्हारे पिता और मेरे पिता बहुत अच्छे मित्र थे। वे अक्सर साथ में, शतरंज खेला करते थे।

कभी-कभी मैं भी उनके साथ होती थी। मेरे और तुम्हारे पिता मुझे पढ़ने के लिए किताबें दिया करते थे, जैसे कि आयुर्वेद विषय की किताबें।

उस रात भी वे लोग शतरंज खेले। कुछ समय बाद तुम्हारे पिता ने दरबान से कहला भेजा कि मैं विष-विरोधक औषधि बताऊँ।
जब मैं उनके पास गई तो बहुत देर हो चुकी थी।

यह सब कैसे हुआ होगा!

मेरे पिता घबराये हुए थे। वे राजा के पास जाने लगे परन्तु रास्ते में उन्हे साँप ने काट लिया।

रामसिंह ही ऐसा एक व्यक्ति था जो सब कुछ जानता था। परन्तु बड़े रहस्यमय तरीके से वह गायब हो गया।
रामसिंह?

तुम्हारे पिता ने बेहोश होने से पहले कुछ शब्द बोले।......

मैं उनका मतलब नहीं समझ सकी। लेकिन मैंने उसे इस ताल-पत्र पर लिख लिया।

आदित्य उससे ताल-पत्र लेकर पढ़ने लगा।

हे सूर्यदेव उदित हो जाओ! चन्द्रमा को ग्रहण लगने वाला है! मालिक असमर्थ हैं। साँप का सर उठे उससे पूर्व आप उदित हो जाओ!

आदित्य ने अपने दुःख को छिपाने का प्रयास किया। उसने विषय ही बदल दिया।

अरे! सब जगह मेरे पिताजी की लिखावट है!

आदित्य पुस्तक में बिल्कुल लीन हो जाता है।

क्रमशः

अपने भारत को जानो

प्रश्नोत्तरी

इस पत्रिका के पन्ने अकसर हमारे महान साधु-संतों की कहानियों से भरे रहते हैं। हो सकता है तुमने उनके बारे में पढ़ा हो, उनको फिल्मों में देखा हो। क्या तुम्हें उनका नाम याद है ? तुम उनके जीवन और महान कार्यों से कहाँ तक परिचित हो?

१. एक राजकुमारी अपने राज्यसुख को त्याग कर भगवान कृष्ण की आराधिका बन गई, वे कौन थीं ?

२. श्रीकृष्ण के दूसरे भक्त जो हमेशा उनका गुणगान करते रहते थे, और वे दृष्टि हीन थे, वे कौन थे ?

३. बंगाल में भक्ति जागरण लानेवाले कौन से संत थे?

४. आदि शंकराचार्य ने पाँच स्थानों पर मठ बनाए, उनका नाम बताइए ?

५. एक तमिल कवियित्री जो भगवान कार्तिकेय, की आराधिका थीं, वे कौन थीं?

६. एक महान दृढ़ मुसलमान कवि जो धर्म की समानता में विश्वास रखते थे। वे कौन थे?

७. हिन्दू और मुस्लिम धर्मों को समानता से माननेवाले एक संत अहमदनगर के पास रहते थे। वे कौन थे?

८. श्रीपेरम्बदूर नामक स्थान राजीव गांधी के हत्याकांड के लिए प्रसिद्ध है। यह एक प्रसिद्ध संत का जन्म स्थान भी है। वे कौन थे ?

फरवरी प्रश्नोत्तरी का उत्तर

१. रजिया सुल्तान, जिसने चार वर्षों तक शासन किया।

२. मदर टेरेसा।

३. प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी।

४. राजकुमारी अमृत कौर।

५. कैप्टेन लक्ष्मी।

६. डॉ. एनी बेसेन्ट।

७. नरगिस दत्त।

८. एम.एस. सुब्बालक्ष्मी।

९. अरुन्धती रॉय, अपने उपन्यास ''दि गॉड ऑफ स्माल थिंग्स''।

१०. आशापुर्ना देवी, अपने बंगाली उपन्यास 'प्रथम प्रतिश्रुती'।

११. अमृत शेर गिल।

१२. लता मांगेशकर, फिल्मों में सबसे अधिक गाने गाने के लिए।
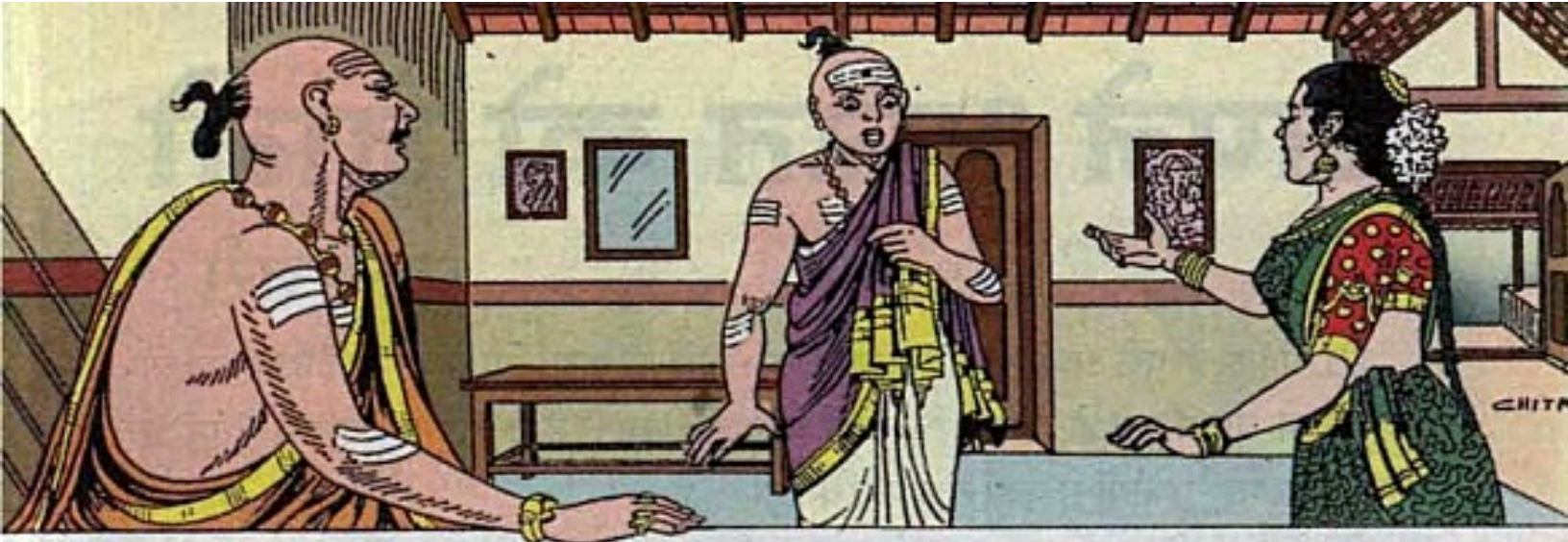
विचित्र विजय

कपिशा नगर में माधवशर्मा नामक एक महा पंडित था। वह धनी भी था। उसके श्यामला नामक सुंदर पुत्री थी। वह भी अपने पिता के समान बुद्धिमती थी।

श्यामला बुद्धिमती और सौंदर्यवती भी थी, इसलिए अनेक युवक उसके साथ विवाह करने को आगे आये। पर श्यामला उन सब के सामने कई प्रश्न रखती, उनका सही जवाब न पाकर वापस लौटा देती। उसका निर्णय था कि जो युवक उसके प्रश्नों का सही उत्तर देगा उसी के साथ वह विवाह करेगी।

उसी नगर में राधाकांत नामक एक निर्धन युवक था। उसका पिता भिक्षाटन कर अपना परिवार पालता था। राधाकांत भी बड़ा बुद्धिमान था। वह विद्या से बड़ा प्रेम रखता था। इसलिए उसने कई गुरुओं की सेवा-शुश्रूषा करके अच्छा ज्ञान प्राप्त किया। फिर भी उसके ज्ञान की तृष्णा समाप्त नहीं हुई। वह और बड़े विद्वानों के पास जाकर अधिक ज्ञान पाना चाहता था। इस कार्य के लिए उसे धन की आवश्यकता थी। माधवशर्मा से धन की सहायता माँगने के विचार से राधाकांत उसके घर पहुँचा। उसने सुन रखा था कि माधवशर्मा की पुत्री बड़ी ही बुद्धिमती है और जो भी उससे विवाह करने आते है; उनसे प्रश्न पूछती रहती है। उसकी यह शर्त भी है कि जो उसके प्रश्नों का सही समाधान देगा, उसी से विवाह रचायेगी। परंतु उसे इस प्रश्नोत्तरी से कुछ लेना-देना नहीं था। वह केवल आर्थिक सहायता पाने वहाँ गया।

श्यामला ने सोचा कि यह युवक भी उसके साथ विवाह करने के ख्याल से आया है। इस भ्रम में पड़कर श्यामला ने राधाकांत से पूछा-"मेरा एक संदेह है। मैंने कई लोगों से पूछा, पर कोई भी उसका समाधान नहीं दे पा रहा।"

"वह संदेह कैसा? बताओ तो सही।" राधाकांत ने पूछा।

पच्चीस वर्ष पहले 'चन्दामामा' में प्रकाशित पुरानी कथा

"इस लोक में तथा परलोक में भी कौन सुखी हो सकता है ? और कौन कष्ट झेलता है?" श्यामला ने पूछा।

"इस लोक तथा परलोक में भी सन्यासी सुखी होते हैं। उन्हें सांसारिक चिंताएँ नहीं होतीं। वह किसी पेड़ के नीचे सोता है, जो कुछ मिलता है, उसे तृप्ति के साथ खा लेता है। उसके मन में किसी भी प्रकार की आशा या कामनाएँ नहीं हैं, इसलिए वह कभी निराश नहीं होता। इस तरह इस लोक में सुख की ज़िंदगी जीकर, बंधन मुक्त हो परलोक में जाता है, अतः वह वहाँ पर भी सुखी होता है। इस लोक तथा परलोक में भी दुख झेलनेवाला व्यक्ति भिखारी है। उसकी इस लोक की ज़िंदगी कठिनाइयों के बीच गुज़रती है। धूप में वह जलता है, वर्षा में भीगता है। जाड़े में काँपता है। उसका सारा समय पेट भरने की चिंता में बीत जाता है। फिर भी उसका पेट कभी नहीं भरता। भीख माँगकर खाना उसे अच्छा नहीं लगता। किन्तु उसके सामने इसके अलावा कोई चारा नहीं था। उसे सदा अपने पेट की ही चिंता लगी रहती थी। वह ज़िंदगी भर किसी का भी उपकार नहीं कर सकता, इसलिए परलोक में भी उसे रत्ती भर भी सुख नहीं मिलता।" राधाकांत ने जवाब दिया।

राधाकांत के उत्तर से संतुष्ट होकर श्यामला ने उसके साथ विवाह करने का
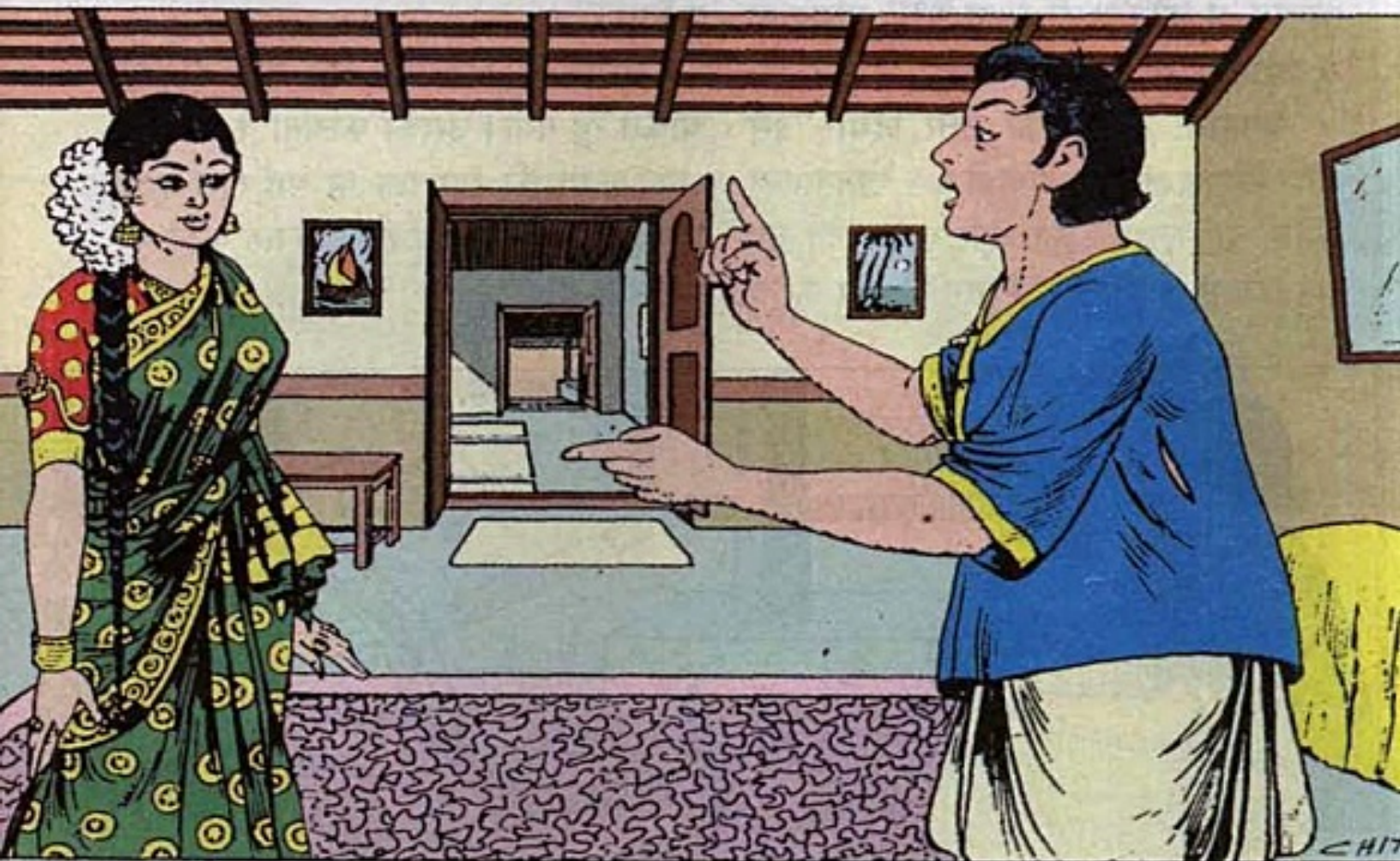
अपने मन में निश्चय कर लिया। मगर राधाकांत के मन में विवाह की कामना न थी। वह माधवशर्मा से धन की मदद पाने आया था। इतनी देर तक श्यामला से बातचीत करने के बाद उसके मन में यह विचार आया कि श्यामला की-मदद से थोड़ा धन पाया जा सकता है।

इसलिए उसने श्यामला से कहा-"मैं तुमसे एक प्रश्न पूछूँगा। उसका जवाब तुम न दे सकोगी तो मुझे तुमको अपने पिता के द्वारा थोड़ी आर्थिक सहायता दिलानी होगी।" श्यामला ने मान लिया।

"इस लोक में सुख भोगकर परलोक में कष्ट कौन झेलता है? इस लोक में कष्ट भोगकर परलोक में कौन सुखी रहता है?" राधाकांत ने श्यामला से पूछा।

श्यामला ने सोचकर उत्तर दिया-"इस लोक में सुख तथा परलोक में कष्ट भोगनेवाला व्यक्ति दुष्ट स्वभाव का धनी व्यक्ति है। वह धन कमाने के वास्ते सब तरह के पाप करता है। कई लोगों के सुख को लूटता है। इस तरह ज़िंदगी बितानेवाला व्यक्ति परलोक में सुखी नहीं हो सकता। इस लोक में कष्ट उठाकर परलोक में सुख भोगनेवाला व्यक्ति योगी है। वह इस लोक में समस्त प्रकार के सुखों को त्याग कर, शरीर को तपाता है और मरने पर परलोक को प्राप्त करता है। वहाँ सुखी रहता है।"

अपने सवाल का जवाब पाकर राधाकांत निराश हो गया। पर इतने में माधवशर्मा ने प्रवेश कर कहा-"बेटा, तुमने मेरी पुत्री के प्रश्न का जवाब दिया है। वह तुम्हारे साथ विवाह करने को तैयार है। यदि तुम भी सहमत हो तो मैं तुम दोनों का विवाह करूँगा।"

राधाकांत अचानक यह बात सुनकर चकित रह गया। उसकी कल्पना के विपरीत अपने कार्य की सफलता पर वह खुश हुआ और उसने श्यामला के साथ विवाह करने की स्वीकृति दी।

बल - रिश्वत

भूषण और पशुपति के खेत साथ-साथ थे। पत्नी को लेकर दोनों में एक दिन झगड़ा हो गया। बात बढ़ गयी और भूषण ने पशुपति को खूब पीटा। भूषण बलवान था और पशुपति कमज़ोर।

खेत से गाँव लौटते हुए पशुपति ने आक्रोश-भरे स्वर में कहा, "अरे भूषण, तुम्हें अपने बल पर बड़ा नाज़ है। इसी बल पर तुमने आज मुझे पीटा। ग्रामाधिकारी से शिकायत करके तुम्हारी चमड़ी उधेड़वाऊँगा। याद रखो, इन्साफ़ की हमेशा जीत होती है।"

"जा...!, जा...!, पागल कहीं के। क्या कहीं इन्साफ़ जीतता है? देख लिया न यहाँ अभी-अभी क्या हुआ? आगे मुँह से एक भी बात निकाली तो तुम्हारी ऐसी की तैसी कर दूँगा। जा...! जा...!", भूषण यों कहकर ठठाकर हँसने लगा।

पशुपति सीधे ग्रामाधिकारी के पास गया। वह ग्रामाधिकारी बड़ा ही रिश्वतख़ोर था। जो ज़्यादा रिश्वत देता, उसके पक्ष में अपना निर्णय सुनाता।

पशुपति ने उसे पूरा मामला सुनाया और कहा, "साहब...! उसने सिर्फ़ मुझे पीटा ही नहीं बल्कि यह कहकर भी मेरा मज़ाक उड़ाया कि जीत हमेशा बल की होती है, इन्साफ़ की नहीं ।" यह कहते हुए वह रूआँसा हो गया।

ग्रामाधिकारी ने मुस्कुराते हुए कहा, "तुम और वह भूषण दोनों मासूम हो।" कहते हुए उसने जेब से रुपए का एक सिक्का निकाला और मेज़ पर रखते हुए कहा, "पचास-पचास"।

बात पशुपति की समझ में आ गयी। उसने हाथ जोड़कर ग्रामाधिकारी को प्रणाम किया और घर चलता बना। रास्ते में वह अपने आप बड़बड़ाने लगा, "वहाँ खेतों के पास बल की जीत हुई और यहाँ ग्रामाधिकारी के न्यायालय में धन की। कुछ भी हो, अच्छाई इसी में है कि झगड़े का निपटारा आपस में ही कर लें। इससे बढ़कर कोई और इन्साफ़ नहीं।"

- शांतकुमार

चित्र कैप्शन प्रतियोगिता

क्या तुम कुछ शब्दों में ऐसा चित्र परिचय बना सकते हो,
जो एक दूसरे से संबंधित चित्रों के अनुकूल हो?

तुम एक सामान्य पोस्टकार्ड पर इसे लिख कर इस पते पर भेज सकते हो :
चित्र परिचय प्रतियोगिता, चन्दामामा,
प्लाट नं. ८२ (पु.न. ९२), डिफेन्स आफिसर्स कालोनी, इकाडुथांगल, चेन्नई -६०० ०९७.
जो हमारे पास इस माह की २० तारीख तक पहुँच जाए । सर्वश्रेष्ठ चित्र परिचय पर १००/-रुपये का पुरस्कार दिया जाएगा, जिसका प्रकाशन अगले अंक के बाद के अंक में किया जाएगा ।

विजयी प्रविष्टि

दो हज़ार की अंतिम रात्री में नववर्ष का इंतज़ार
नववर्ष के स्वागत के लिए दीपक किए तैयार

बधाइयां

जनवरी अंक के पुरस्कार विजेता हैं :

अन्तु सिंह,
जवाहर नवोदय विद्यालय,
गजनेर - ३३४ ३०१.
जिला बीकानेर, (राज.)

CHANDAMAMA (Hindi) MARCH 2001 Registrar of Newspapers India RN1087/57